ऋग्वेद

ओ३म्

यजुर्वेद

पवमान

(मासिक)

मूल्य: ₹ 20

वर्ष : 31 श्रावण-भाद्रपद वि०स० 2076 अगस्त 2019 अंक : 8

मुद्रक: सरस्वती प्रेस, देहरादून

वजन: 50 ग्राम

शरदुत्सव

16 अक्टूबर 2019 से 20 अक्टूबर 2019 तक
आप सभी सादर आमंत्रित हैं।

तिरंगा हमारा है शान-ए-जिंदगी
वतन परस्ती हैं वफा-ए-जमी
देश के लिए मर मिटना कुबूल हैं हमें
अखंड भारत के स्वप्न का जुनून है हमें..!!

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नालापानी, देहरादून-248008

सामवेद

अथर्ववेद

पवमान पत्रिका हमारी वेबसाइट www.vaidicsadhanashramdehradun.com पर भी उपलब्ध है।

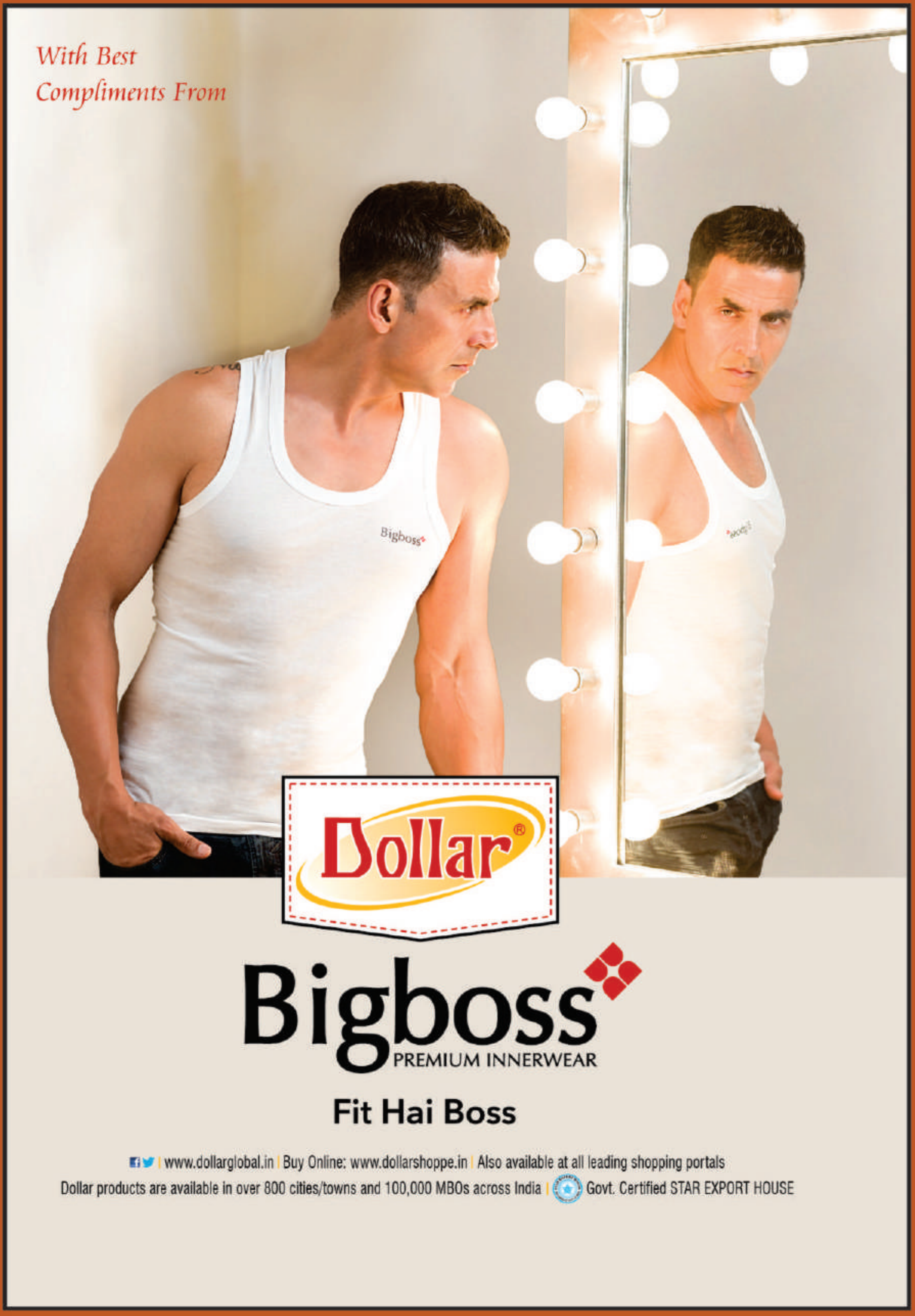
With Best
Compliments From
Bigboss
Dollar®
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR
Fit Hai Boss
www.dollarglobal.in | Buy Online: www.dollarshoppe.in | Also available at all leading shopping portals
Dollar products are available in over 800 cities/towns and 100,000 MBOs across India | Govt. Certified STAR EXPORT HOUSE

ओ३म्

पवमान

वर्ष–31 अंक–8

श्रावण–भाद्रपद 2076 विक्रमी अगस्त 2019

सृष्टि संवत् 1,96,08,53,120 दयानन्दाब्द : 195

★

–: संरक्षक :–

स्वामी चित्तेश्वरानन्द सरस्वती

मो. : 9410102568

★

–: अध्यक्ष :–

श्री दर्शनकुमार अग्निहोत्री

मो. : 09810033799

★

–: सचिव :–

प्रेम प्रकाश शर्मा

मो. : 9412051586

★

–: आद्य सम्पादक :–

स्व0 श्री देवदत्त बाली

★

–: मुख्य सम्पादक :–

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

अवैतनिक

मो. : 9336225967

★

–: सम्पादक मण्डल :–

अवैतनिक

आचार्य आशीष दर्शनाचार्य

मनमोहन कुमार आर्य

★

–: कार्यालय :–

वैदिक साधन आश्रम, तपोवन,

तपोवन मार्ग, देहरादून–248008

दूरभाष : 0135–2787001

मोबाईल : 7310641586

Email : vaidicsadanashram88@gmail.com

Web-www.vaidicsadhanashramdehradun.com

विषयानुक्रम

सम्पादकीय	डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री	2
वेदामृत	आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकृत	3
वेद में है ज्योतिष का आधार	डॉ कृष्णकांत वैदिक	4
फलित ज्योतिष अस्वीकार्य	मनमोहन कुमार आर्य	7
संस्कृति के अनन्य भक्त पं. चमपूति	मनमोहन कुमार आर्य	11
मनोवृत्तियां सोम रस वीतराग	महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज	15
बसन्त कुमार विस्वास	स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज	16
किसी ग्रन्थ के ईश्वरीय ज्ञान होने की शर्तें	आचार्य आशीष आर्य	17
धन पास रखने में सुख है या त्याग में	महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वतीजी	19
आर्य समाज	आर्य रविन्द्र कुमार	20
आयुर्वेदिक चिकित्सा	डॉ० भगवान दास	22
आरोग्यधाम एवं दिव्य आध्यात्मिक शक्ति	वैदिक साधन आश्रम तपोवन	24
श्रीराम का हनुमान जी पर विश्वास	ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी	27
ईश्वर चैतन्य स्वरूप शक्ति है	पं० उम्मेद सिंह विशारद जी	29
दानदाताओं की सूची		32

वैदिक साधन आश्रम तपोवन, देहरादून के बैंक खातों का विवरण

दान हेतु बैंक खाते का नाम	बैंक का नाम व पता	बैंक अकाउन्ट नं.	IFSC Code
आश्रम को दान देने के लिये			
1. "वैदिक साधन आश्रम"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101001530	CNRB0002162
पवमान पत्रिका शुल्क			
2. "पवमान"	केनरा बैंक, क्लाक टावर ब्रांच देहरादून	2162101021169	CNRB0002162
सत्संग भवन एवं आरोग्य धाम के निर्माण में सहयोग हेतु			
3. "वैदिक साधन आश्रम"	ओरियन्टल बैंक ऑफ कामर्स 17 राजपुर रोड, देहरादून	00022010029560	ORBC0100002
तपोवन विद्यानिकेतन स्कूल के लिये			
4. 'तपोवन विद्या निकेतन"	यूनियन बैंक, तपोवन रोड, नालापानी, देहरादून	602402010003171	UBIN0560243

पवमान पत्रिका में विज्ञापन के रेट्स

1. कलर्ड फुल पेज — रु. 5000/– प्रति माह
2. ब्लैक एण्ड व्हाइट फुल पेज — रु. 2000/– प्रति माह
3. ब्लैक एण्ड व्हाइट हॉफ पेज — रु. 1000/– प्रति माह

सदस्यों के लिए पवमान पत्रिका के रेट्स

1. वार्षिक मूल्य (12 प्रतियाँ प्रति वर्ष) — रु. 200/– वार्षिक
2. 15 वर्ष (आजीवन) के लिए मूल्य — रु. 2000/–

नोटः पवमान पत्रिका फुटकर विक्रय के लिए उपलब्ध नहीं है।

पवमान में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र देहरादून ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

सम्पादकीय

सहिष्णुता

सहिष्णुता का अर्थ है– सहनशीलता या क्षमाशीलता। निंदा, अपमान और हानि में अपराध करने वाले को दंड देने का भाव न रखना और अन्य लोगों के धार्मिक कर्मकाण्ड, खानपान और रीति–रिवाजों को सम्मान देते हुए उनसे प्रेम पूर्वक व्यवहार करना सहिष्णुता है। संसार में जितने भी महापुरुष हुए हैं, सहिष्णुता उनका विशेष गुण रहा है। मनुस्मृति में धर्म के दस लक्षण बताए गए हैं जिनमें क्षमा का मुख्य स्थान है। आपस्तम्ब स्मृति के अनुसार क्षमा प्राणियों का उत्तम गुण है। किसी व्यक्ति द्वारा किए गए दुर्व्यवहार, शारीरिक कष्ट या आर्थिक हानि किए जाने से मन में क्रोध उत्पन्न होता है, जो शब्दों में प्रकट कर दिया जाता है या प्रतिक्रिया स्वरूप मानसिक या शारीरिक कष्ट दिया जाता है। सज्जन व्यक्ति अपने विरुद्ध किए गए अपराध को भूल जाते हैं तथा क्षमा प्रदान कर देते हैं। परस्पर एक दूसरे के अपराध को क्षमा करने की उदारता, हम में होनी चाहिए। किसी भी व्यक्ति के प्रति जाने–अनजाने में हुए दुर्व्यवहार के लिए क्षमा मांगने से एक–दूसरे के प्रति मनोमालिन्य सदा के लिए समाप्त हो जाता है।

महाभारत के अनुसार क्षमारूपी गुण सब को वश में कर लेता है। क्षमारूपी तलवार जिसके हाथ में है, उसका दुर्जन क्या बिगाड़ेगा? महाभारत में ही अन्यत्र यह भी कहा गया है कि क्षमा को दोष नहीं मानना चाहिए, यह निश्चय ही परम बल है। क्षमा निर्बल मनुष्यों का गुण है और बलवानों का आभूषण है। जैसे तृणरहित स्थान में जलती हुई अग्नि अपने आप शांत हो जाती है, उसी प्रकार क्षमावान् व्यक्ति के साथ बैर रखने वाले का बैर भी कुछ हानि नहीं पहुंचा सकता है। सहिष्णुओं को लोग निर्बल मान लेते हैं और क्षमाशीलता के गुण को भीरुता मानते हुए अवगुण समझने लगते हैं, परन्तु यह परम बल है क्योंकि केवल शक्तिशाली व्यक्ति ही क्षमा कर सकता है। आज हम जिस संसार में रह रहे हैं वहां पर विभिन्न धर्म, जाति और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। उनके न केवल सम्प्रदाय और रीति–रिवाज भिन्न हैं अपितु खान–पान बोलियां और आदतें भी भिन्न हैं। हमें समाज में सद्भाव और प्रेम से रहने के लिए आपस में एक दूसरे के प्रति सहिष्णुता के विचार रखना भी अत्यंत आवश्यक है। इसके बिना हम आपस में कोई ताल–मेल नहीं रख सकते हैं। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए सभी जीवों के प्रति उदारता की भावना होना आवश्यक है। उदारता मनुष्य का ऐसा गुण है जो उसे विकसित करके श्रेष्ठ स्थान की ओर ले जाता है। हमें न केवल अपने साथी मनुष्यों के प्रति सहिष्णु होना चाहिए अपितु इस संसार के सभी जीवों के प्रति भी हम सहिष्णु रहें तभी सही अर्थों में हम मानवता को प्राप्त कर सकते हैं। ऋग्वेद के अन्तिम मंत्र का भावार्थ यह है कि विश्व के समस्त निवासियों के संकल्प समान हों। उनके मन व भावनाएं समान हों। यदि उनके विचारों और भावनाओं में समानता होगी तो सहिष्णुता स्वाभाविक रूप से प्राप्त हो सकती है। सहिष्णुता हमारी संस्कृति के रोम–रोम में बसती है। सहिष्णुता से ही हम राष्ट्र और विश्व में प्रेम और बन्धुत्व का प्रसार कर सकते हैं।

डॉ० कृष्ण कान्त वैदिक शास्त्री

वेदामृत

अविनाश का उपाय

स घा वीरो न रिश्यचति, यमिन्द्रो ब्रह्मणस्पतिः।
सोमो हिनोति मर्त्यम्।

ऋग्वेद 1.18.4

ऋषिः मेधातिथिः काण्वः। देवता इन्द्रः, ब्रह्मणस्पतिः सोमश्च। छन्दः निचृद् गायत्री।

(सः) वह **(वीरः)** वीर (घ) निश्चय ही (न) नहीं (रिश्यति) क्षतिग्रस्त और विनष्ट होता है, (यं) जिस (मर्त्यं) मर्त्य को, मरणधर्मा को **(इन्द्रः)** इन्द्र, (ब्रह्मणस्पतिः) ब्रह्मणस्पति {और} (सोमः) सोम (हिनोति) बढ़ाता है।

क्या तुम वीर हो और तुम्हें यह विश्वास है कि जगत् की बीहड़ पगडण्डी पर चलते हुए तुम किसी शत्रु से क्षतिग्रस्त या विनष्ट नहीं होगे? पर कहीं ऐसा तो नहीं है कि समय आने पर तुम्हारा यह विश्वास असत्य सिद्ध हो और तुम हृदय में एक वेदना लिये हुए सिसको, चिल्लाओ, शोर मचाओ कि अरे मैं तो मारा गया, मेरा तो सब–कुछ लुट गया, मैं तो क्षत–विक्षत हो गया। यदि तनिक भी तुम्हें अपने ऊपर सन्देह है, जरा भी मन कहता है कि विपदा आने पर सुरक्षित बच निकलना कठिन है, अचलायमान होकर दृढ़ता के साथ अविनष्ट बने रहना दुष्कर है, तो आओ, कान खोलकर अविनाश का वेदोक्त उपाय सुनो।

अविनाश! अविनाश!! कितना महान् शब्द है। कितना–कुछ इसके अन्दर छिपा हुआ है। आत्मिक अविनाश, भौतिक अविनाश, वैयक्तिक अविनाश, राष्ट्रिय अविनाश। पग–पग पर मनुष्य विनष्ट होता है, चरित्र से विनष्ट होता है, धर्म से विनष्ट होता है, सम्पत्ति से विनष्ट होता है, राष्ट्रियता से विनष्ट होता है। उस सकल विनाश से बचना कितनी बड़ी उपलब्धि है। वह प्राप्त होती है उस मर्त्य को, जिसे इन्द्र, ब्रह्मणस्पति और सोम बढ़ाते हैं। इन्द्र है अग्रगामिता का, शौर्य का, अविचलता का, रिपु–विदारण का और परमैश्वर्यशालिता का प्रतिनिधि। वैदिक वर्णन इन्द्र की इन विशेषताओं से भरे पड़े हैं। हम अपने अन्दर भी इन्द्र के इन गुणों को ग्रहण कर सकते हैं।

'ब्रह्मणस्पति' ज्ञान, महत्ता, विशालता, वृद्धि, ब्रह्मवर्चस आदि का प्रतिनिधित्व करता है। ब्रह्मणस्पति के इन आदर्शों को हम अपने अन्दर प्रतिबिम्बित कर सकते हैं। 'सोम' है शान्ति, रसमयता, समस्वरता सर्जनशीलता, सत्प्रेरणा आदि का प्रतिनिधि। अतः वैदिक सोम से इन विशेषताओं को हम प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार से तीनों देव, परमेश्वरी सत्ता के ये तीनों रूप, जब हमारी वृद्धि एवं समुन्नति में संलग्न हो जायेंगे, तब संसार की कोई शक्ति हमें नीचा नहीं दिखा सकेगी, क्षतिग्रस्त या विनष्ट नहीं कर सकेगी। अन्यथा मनुष्य तो मर्त्य है, मरणधर्मा है, इन देवों से यदि वह शक्ति और सन्देश नहीं लेगा, तो कोई भी बाह्य या आन्तरिक रिपु उसे धर दबोचेगा और प्रहारों से जर्जर करके विनष्ट कर डालेगा।

(आचार्य डॉ० रामनाथ वेदालंकृत वेद–मंजरी से साभार)

वेद में है ज्योतिष का आधार

–डॉ कृष्णकांत वैदिक

वेद के यथार्थ ज्ञान के लिए वेदांग अर्थात् उसके छः विषयों का ज्ञान नितान्त आवश्यक है। वेदमन्त्रों के उचित उच्चारण के लिए शिक्षा, यज्ञीय अनुष्ठान और कर्मकाण्ड के लिए कल्प, शब्दों की व्युत्पत्ति और सिद्धि के लिए व्याकरण, अर्थज्ञान और व्युत्पत्ति के लिए निरुक्त, वैदिक छन्दों की जानकारी के लिए छन्द और अनुष्ठानों के उचित काल–निर्णय के लिए ज्योतिष की उपयोगिता है। ज्योतिष को वेद का चक्षु कहा गया है। वेदों का प्रधान विषय यज्ञ सम्पादन है। इन यज्ञों के उचित रूप से करने के लिए उनका आरम्भ ग्रहों की स्थिति को देख कर किया जाता है। इसको बताने वाला शास्त्र ज्योतिष है। यज्ञ का विधान विशिष्ट समयों की गणना किए जाने की अपेक्षा रखता है। वेदों में नक्षत्र, तिथि, पक्ष, मास, संवत्सर–काल के समस्त खण्डों के साथ ही यज्ञ–याग का विधान पाया जाता है। इन समस्त विषयों का मूल कारण और विस्तृत ज्ञान, जैसे दिन, मास, वर्ष, युग, घटी, पल, होरा, सन्धि, पक्ष आदि ज्योतिष शास्त्र में ही पाया जा सकता है। इसलिए यज्ञीय कर्मकाण्ड को सम्पन्न करने के लिए ज्योतिष का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है।

यजुर्वेद में बारह मासों और ऋतुओं का वर्णन मिलता है–

मधश्च माध्वश्च वासन्तिकावृतू। (यजु० 13/25)

अर्थात् मधु और माघव मास बसन्त ऋतु के अन्तर्गत हैं, क्योंकि इन माहों में मधु की उत्पत्ति व संचय आदि उनके पुष्पों में होता है। ज्योतिर्विज्ञान में इनके नाम चैत्र और बैशाख हैं।

शुक्रश्च शुचिश्च ग्रैष्मावृतू। –यजु० 14/6

अर्थात् शुक्र और शुचि ग्रीष्म) ऋतु के अन्तर्गत हैं, क्योंकि शुक्र और शुचि दोनों का अर्थ अग्नि भी होता है। इन दोनों माहों में विशेष अग्नि, ताप ओर उष्णता होती है। ज्योतिर्विज्ञान में इनके नाम ज्येष्ठ और आषाढ़ हैं।

नभश्च नभस्यश्च वार्षिका वृतू।–यजु० 14/15

अर्थात् नभ और नभस्य वर्षा ऋत के नाम हैं। नभ के अर्थ आकाश और बादल हैं। इस माह में बादल छाये रहते हैं। ज्योतिर्विज्ञान में इनके नाम श्रावण और भाद्रपद हैं।

इषश्चोर्जश्च शारदावृत्। –यजु0 14/16

इष और ऊर्ज शरद ऋत के मास हैं। अन्न को इष और बल को ऊर्ज कहते हैं। इन माहों में अन्न पकता है और उस पके अन्न में बल देने की शक्ति भी उत्पन्न होती है। ज्योतिर्विज्ञान में इनके नाम आश्विन और कार्तिक हैं।

सहश्च सहस्यश्च हैमन्तिकावृतू। –यजु० 14/27

सह ओर सहश्च मास हेमन्त ऋतु के हैं। सह का अर्थ साथ, सहित और सादृश्य आदि है। इन माहों में शीत के कारण शरीर के अंग सिकुड़ कर रखने की प्रवृत्ति होती है। ज्योतिर्विज्ञान में इनके नाम आग्रहयण और पौष हैं।

तपश्च तपस्यश्च शैशिरावृतू। –यजु० 15/57

तपश्च और तपस्यश्च मास शिशिर ऋतु के हैं। तप और तपस्या के लिए हितकारी ये दोनों माह शीत की न्यूनता और ग्रीष्म का अभाव होने से तपयुक्त होते हैं। ज्योतिर्विज्ञान में इनके नाम माघ और फाल्गुन हैं।

तेरहवां मास

वेद में बारह मासों के अतिरिक्त तेरहवें मास का भी उल्लेख मिलता है। बारह मास ये हैं– 1. मधु चैत्र 2. माघव .वैशाख 3. शक्र .ज्येष्ठ 4. शुचि .अषाढ़ 5. नभ.श्रावण 6. नभस्य भाद्रपद 7. इष .आश्विन 8. ऊर्ज. कार्तिक 9. सह. आग्रहयण 10. सहस्य. पौष 11. तप. माघ 12. तपस्य . फाल्गुन 13. अंहस्पति. इसे मलमास कहते हैं। अथर्ववेद में तेरहवां मास सनिस्रस कहा गया है। त्रयोदशवां मास अधिक मास या मलमास होने से ज्येष्ठता का मास माना जाता है। अतः यह इन्द्र का गृह है, किसी कनिष्ठ का नहीं, क्योंकि कहा गया है– **'इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः'**।

अर्धमास– शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष और तिथियों के देवता

मासों का निर्माण अर्धमासों से होता है। अर्धमासों का दर्शन और ज्ञान शुक्ल और कृष्ण पक्ष से होता है। पूर्णिमा और अमावस्या के दर्शन से दोनों पक्षों अर्थात् अर्धमासों की पूर्णता, चन्द्र के अर्धभागों कों देखने से अष्टमी का ज्ञान, पूर्णिमा के बाद क्षय ओर अमावस्या के बाद चन्द्र की रेखा के दर्शन से प्रतिप्रदाओं का ज्ञान होता है। प्रतिप्रदा से क्रमशः चन्द्र की कला में वृद्धि से शुक्ल पक्ष और क्षय से कृष्ण पक्ष की तिथियों की क्रमशः गणना का ज्ञान होता है। वेद में दोनों पक्षों की तिथियों की गणना उनके अधिष्ठाता देवों के साथ वर्णित की गई है।

शुक्ल पक्ष–

शुक्ल पक्ष की तिथियों की गणना में यजुर्वेद के एक मन्त्र–यजुर्वेद 25/4 के अनुसार अग्नि की प्रतिप्रदा, वायु की द्वितीया, इन्द्र की तृतीया, सोम की चतुर्थी, अदिति की पंचमी, इन्द्राणी की षष्ठी, मरुतों की सप्तमी, बृहस्पति की अष्टमी, अर्यमा की नवमी, धता की दशमी, इन्द्र की एकादशी, वरुण की द्वादशी, और यम की त्रायोदशी जानी जाती है।

कृष्ण पक्ष–

कृष्ण पक्ष की तिथियों की गणना में यजुर्वेद के एक मन्त्र–यजुर्वेद 25/6 के अनुसार इन्द्राग्नी की प्रतिप्रदा, सरस्वती की द्वितीया, मित्रा की तृतीया, जलों की चतुर्थी, निर्ऋति की पंचमी, अग्नी सोम की षष्ठी, सर्पों की सप्तमी, विष्णु की अष्टमी, पूषा की नवमी, त्वष्ट्रा की दशमी, इन्द्र की एकादशी, वरुण की द्वादशी, और यम की त्रायोदशी जानी जाती है। द्यावापृथिव्योर्दक्षिणंपार्श्वम् अर्थात् द्यावापृथिवी का दक्षिण पार्श्व या कृष्ण पक्ष है और विश्वेषां देवनामुतरम् अर्थात् विश्वेदेवों का उत्तरपार्श्व शुक्ल पक्ष है। इस प्रकार अपने–अपने पक्ष की चतुर्दशी के उपरोक्त देव हैं और ये पक्षान्त तिथि के देव भी हैं।

नक्षत्र विद्या

ज्योतिर्विज्ञान के विशेष ज्ञान के लिीए नक्षत्रों के बारे में ज्ञान करना आवश्यक है। यजुर्वेद के एक मन्त्र –यजुर्वेद 22/28 में कहा गया है– नक्षत्रोभ्यः स्वाहा, नक्षित्रियेभ्येः

स्वाहा। नक्षत्रों के ज्ञान के लिए और उनके प्रभाव व उपयोगिता को जानने के लिए मनुष्य सदा से प्रयत्नशील रहा है। अथर्ववेद के एक मन्त्र में नक्षत्रों का वर्णन और उनकी उपयोगिता का उल्लेख इस प्रकार मिलता है— 1— कृतिका और 2— रोहिणी नक्षत्रा मेरे लिए अच्छे प्रकार के यज्ञ के लिए होवें। 3— मृगशिरा कल्याणप्रद हो। 4— आर्द्रा सुखकारी हो। 5— पुनर्वसु सुन्दर चेष्टा वाला हो। 6— पुष्य अनुकूलता देने वाला हो। 7— आश्लेषा प्रकाशमान हो। 8— मघा सुन्दर निवास देने वाला हो। 9— पूर्वा—पफाल्गुनी और 10— उत्तरापफाल्गुनी पुण्य साधक हों। 11— हस्त और 12— चित्रा कल्याणकारक हों। 13— स्वाति सुखदाता हो। 14— विशाखा सिद्धिदाता हो। 15— अनुराध यज्ञ— सिद्धिदाता हो। 16— ज्येष्ठा श्रेष्ठ नक्षत्र और 17— मूल नक्षत्र अशुभ कारक है। 18— पुर्वाषाढ़ा अन्नप्रदाता है। 19—उत्तरषाढ़ा बलदायक है। 20— अभिजित पुण्य साधक है। 21— श्रवण नक्षत्र और 22— धनिष्ठा पुष्टिकर्त्ता और धनदाता हैं। 23— शतमिषग् महद्यशदाता है। 24— पूर्वाभाद्रपदा और 25— उत्तराभाद्रपदा सुखवृद्धिकर्त्ता हैं। 26— रेवती और 27— अश्विनी ऐश्वर्यप्रदाता हैं। 28— भरणी नक्षत्रा ध्न से परिपूर्ण करने वाला है। मुख्यतः ज्योतिष में 27 नक्षत्र माने जाते हैं परन्तु असिजित् को 28 वें नक्षत्र के रूप में माना गया है।

ज्योतिर्विज्ञान के अन्तर्गत पृथिवी, सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों की गति की गणना की जाती है। इसके साथ ही इसमें वर्षचक्र, तुचक्र, पर्व, सूर्यग्रहण, चन्द्रग्रहण, कालचक्र का निर्धारण और शुभ व अशुभ मुहूर्तों का अध्ययन किया जाता है। इन समस्त विषयों और यज्ञों का हमारे पर्यावरण और जीवन से अत्यन्त निकट का सम्बन्ध है। मानव चन्द्रमा पर पहले ही पहुँच चुका है और उसने मंगल ग्रह पर भी कई यान भेज दिए हैं। ज्ञान—विज्ञान की वृद्धि के लिए वेदाधारित ज्योतिर्विज्ञान का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

शुभ सूचना

आपको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि 1 जुलाई 2019 से भारतीय योग संस्थान द्वारा वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून के सौजन्य से महात्मा प्रभु आश्रित जी सतसंग भवन में प्रातः 5.30 बजे से प्रातः 7.00 बजे तक निःशुल्क योग प्रशिक्षण प्रारम्भ कर दिया गया है। स्त्री एवं पुरुष सहभागियों के लिए अलग—अलग महिला एवं पुरुष प्रशिक्षक की व्यवस्था है। आप सभी भाई—बन्धु इस सुविधा का लाभ उठायें और बिना किसी औषधि के अपने आप को स्वस्थ रखें।

फलित ज्योतिष वेदसम्मत न होने से आर्यसमाज को अस्वीकार्य है

—मनमोहन कुमार आर्य

ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य हिन्दुओं के पतन के कारणों में मूर्तिपूजा एवं फलित ज्योतिष को प्रमुख कारण स्वीकार किया है। उनके अनुसार यह दोनों विचार व इन पर विश्वास अवैदिक होने से इनसे मनुष्यों को कोई लाभ नहीं होता अपितु हानि ही हानि होती है। इसका प्रमाण भारत पर मुस्लिम आक्रमणों व अंग्रेजों के राज्य में हमारे राजाओं की पराजय सहित सोमनाथ, कृष्ण जन्म भूमि, राम जन्म भूमि, काशी–विश्वनाथ मन्दिर के ध्वंस व लूट आदि को माना जा सकता है। यदि हमारे धर्म में यह विजातीय विचार व मान्यतायें न होती तो हमने विगत 1300 वर्षों में जो अपमान व पराजय के दुःख झेले हैं, वह कदापि न हुए होते। इस बात को यदि एक वाक्य में कहा जाये तो हमारे सभी दुःखों का कारण वेदमत का त्याग और अज्ञान व अन्धविश्वासों से युक्त अवैदिक मतों व मान्यताओं को मानना था। यदि आज भी हम सब सनातन धर्मी वैदिक धर्मी लोग पुराणों की मान्यताओं का त्याग कर ईश्वरीय ज्ञान वेद व उसकी मान्यताओं को स्वीकार कर संगठित हो जायें, तो संसार की कोई ताकत हमें पराजित नहीं कर सकती। शायद इसीलिये ऋषि दयानन्द ने वेदों की मान्यताओं के आधार पर आर्यसमाज का चौथा नियम बनाया है जिसमें उन्होंने कहा है कि सत्य के ग्रहण करने और असत्य का त्याग करने में सदा उद्यत रहना चाहिये। तीसरा नियम है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों हिन्दुओं सहित अन्य सभी मतावम्बियों का भी परम धर्म है। एक प्रमुख नियम यह भी है कि अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। हम समझते हैं कि यदि सनातन धर्म के सभी अनुयायियों ने ऋषि दयानन्द के इन महान सन्देशों को आत्मसात् किया होता तो आज विश्व में हमारी स्थिति कहीं अधिक सुदृढ़ होती और देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन व उसके बाद जो गलतियां हमारे कुछ नेताओं से हुई हैं, वह न हुईं होती।

फलित ज्योतिष हमारे सौर्य मण्डल के ग्रहों की स्थिति व गतियों को हमारे भाग्य व सुख–दुःखों से जोड़ता है। हमारी सफलताओं और असफलताओं को पुरुषार्थ व आलस्य का परिणाम न मानकर उसे ग्रह योग के अनुसार मानता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि खगोल ज्योतिष का ज्ञान तो सत्य है परन्तु फलित ज्योतिष व उसके सिद्धान्त मिथ्या हैं। मनुष्य के भाग्य से हमारे सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र व शनि आदि ग्रहों का कोई सम्बन्ध नहीं है। आर्यसमाज की मान्यता के अनुसार यह सभी ग्रह जड़ व ज्ञानशून्य हैं। यह ग्रह किसी भी प्रकार के ज्ञान एवं सम्वेदना से रहित हैं। हमें किसी वस्तु से सुख व दुःख तभी प्राप्त हो सकता है जब कि वह चेतन पदार्थ अर्थात् मनुष्य या पशु आदि प्राणी हों। ज्ञान होने

के साथ हमें सुख व दुःख पहुंचाने वाली सत्ता में विवेक एवं शक्ति भी होनी चाहिये। जड़ व निर्जीव होने के कारण किसी भी ग्रह में न कुछ ज्ञान है न हमें सुख व दुःख देने की शक्ति। सूर्य के प्रकाश व ताप से संसार के सभी लोगों को समान रूप से लाभ व हानि होती है। सभी व्यक्तियों के प्रति सूर्य का व्यवहार अलग अलग नहीं हो सकता। इसी प्रकार से शनि व अन्य ग्रहों के बारे में भी जाना व माना जा सकता है।

आर्यसमाज वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानता है और इसे प्रमाणित भी करता है। वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक हैं। यदि फलित ज्योतिष का ज्ञान सत्य होता तो इसका उल्लेख वेदों में अवश्य होता। वेदों में उल्लेख न होने के कारण भी फलित ज्योतिष का ज्ञान वेदों के विपरीत सिद्ध होता है। सत्य और असत्य का विचार करने पर भी फलित ज्योतिष का ज्ञान अविद्या ही सिद्ध होता है। हमने अनेक ज्योतिषियों की फलित ज्योतिष के आधार पर भविष्यवाणियों को निरर्थक व असत्य पाया है। पाकिस्तान भारत में आतंकवादी भेज कर अशान्ति उत्पन्न करने सहित निर्दोष लोगों की हत्या करता रहता है। कोई ज्योतिषी यह नहीं बताता कि आगामी आतंकी हमला किस स्थान पर कब होगा और उस हमले के शिकार हमारे सेना के कौन कौन से अधिकारी व जवान होंगे? हमारे एक मित्र उच्च कोटि के ज्यातिषाचार्य थे। अनेक ज्योतिषी उनसे परामर्श भी लिया करते थे। एक बार उनकी पत्नी का एक दुर्घटना में हाथ टूट गया। हम उनके घर शिष्टाचार के लिये गये और पति–पत्नी से मिले। बातें करते हुए हमारे मित्र की पत्नी ने कहा कि मेरे पति नगर के अनेक लोगों का भाग्य बताते हैं परन्तु इन्होंने कभी मुझे यह नहीं बताया कि मेरी दुर्घटना हो सकती है और मेरा हाथ टूट सकता है। हमने यह भी पाया कि हमारे मित्र की पत्नी अपने पति के ज्योतिषीय कार्यों से प्रायः खिन्न रहा करती थी और उन्हीं के सामने हमसे उनकी शिकायत किया करती थी। हमारे मित्र श्री चन्द्रदत्त शर्मा व उनकी धर्मपत्नी दोनों ही हमें अपने छोटे भाई की तरह स्नेह देते थे। दुर्भाग्य से आज दोनों ही इस संसार में नहीं हैं। हमने अपने मित्र की अनेक भविष्यवाणियां असत्य सिद्ध होते देखी हैं। इससे हमारा निश्चित मत है कि फलित ज्योतिष मनुष्य के लिए हितकारी नहीं अपितु अहितकारी है। माता–पिता अपने युवक युवती पुत्र व पुत्रियों के लिए वर व वधु ढूंढते हैं। उन्हें गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार वर–वधू मिल भी जाते हैं परन्तु हमारे ज्योतिषि पण्डित अनेक मामलों में उनके ग्रहों की स्थिति आदि के कारण उनका विवाह होना हानिकारक बताकर उनका विवाह नहीं होने देते। वास्तविकता यह भी है कि जिन अनेक लोगों की जन्ममत्री मिल जाती है उनके विवाह में अनेक प्रकार की अनहोनी यथा वर की विवाह से पूर्व भीषण दुर्घटना, कुछ मामलों में किसी एक की मृत्यु व विवाह के दिन आंधी व तूफान आदि से अनेक प्रकार की बाधायें अथवा परिवार में किसी सदस्य की मृत्यु आदि जैसी बातें हो जाती हैं। अतः फलित ज्योतिष को न मानने में ही लाभ हैं। विश्व में ईसाई, मुसलमान, सिख एवं वाममार्गी आदि लोग व अन्य कुछ मत–मतान्तरों के लोग फलित ज्योतिष की किसी मान्यता को नहीं मानते और ऐसे लोगों को जीवन में सुखी व सम्पन्न देखा जाता है। इससे फलित ज्योतिष एक आधारहीन मिथ्या मान्यता व अविद्या सिद्ध होती है। शिक्षित बन्धुओं को

फलित ज्योतिष के जाल में नहीं फंसना चाहिये और ईश्वर तथा अपने प्रारब्ध सहित पुरुषार्थ पर विश्वास रखना चाहिये। कहा भी गया है कि प्रारब्ध से पुरुषार्थ बलवान होता है। पुरुषार्थ से प्रारब्ध को भी बदला जा सकता है। अतः विद्या अर्जित करने, वेदों के स्वाध्याय सहित पुरुषार्थ को ही महत्व देना चाहिये।

वैदिक काल में फलित ज्योतिष का अस्तित्व था, इसकी सम्भावना नहीं है। रामायण एवं महाभारत ग्रन्थों में फलित ज्योतिष विषयक कोई सन्दर्भ प्राप्त नहीं होता। रामचन्द्र जी के राज्याभिषेक का निश्चय वसिष्ठ आदि ऋषियों की सम्मति से राजा दशरथ ने किया था। यह निश्चय कैकेयी के राजा दशरथ से वर मांग लेने के कारण कृतकार्य नहीं हो सका। यदि राज्याभिषेक का निर्णय फलित ज्योतिष के आधार पर हुआ था तो भी वह गलत सिद्ध हुआ और यदि बिना फलित ज्योतिष के विचार के किया गया तो इससे भी यही सिद्ध होता है कि रामायण काल में फलित ज्योतिष जैसे अवैदिक कृत्यों का अस्तित्व नहीं था। वेदज्ञानी ऋषियों की उपस्थिति में फलित ज्योतिष जैसा कोई अन्धविश्वास पनप भी नहीं सकता था। महाभारत की अनेक घटनाओं के वर्णनों में ऋषि वेद व्यास जी ने फलित ज्योतिष का वर्णन नहीं किया। अतः फलित ज्योतिष महाभारत काल के उत्तरकाल में आरम्भ हुआ। जिन्होंने भी इसका आरम्भ किया वह वेदज्ञान व ईश्वर के सत्य ज्ञान सहित योग–ध्यान–अध्यात्म विद्या से विहीन प्रतीत होते हैं। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय समुल्लास में जन्म–पत्र की आलोचना कर इसे मरण–पत्र बताया है। उन्होंने जो वर्णन किया है वह सजीव एवं मार्मिक है। सोमनाथ मन्दिर के ध्वस्त करने, लूटने व उसके पतन में फलित ज्योतिष का ही मुख्य योगदान था। यदि मूर्तिपूजा का अन्धविश्वास तथा फलित ज्योतिष के प्रति अनावश्यक विश्वास न होता तो देश व आर्य–हिन्दू जाति को अपमानित करने वाली यह घटना कदापि न होती। ऋषि दयानन्द जी के अनुसार बुद्धिमान एवं विवेकशील मनुष्यों को अपनी सन्तानों का जन्म पत्र नहीं बनवाना चाहिये और न ही किसी फलित ज्योतिषी से अपने बच्चों का भाग्यफल ही पूछना चाहिये अन्यथा वह अनेक असत्य भ्रम एवं मानसिक विकारों से ग्रस्त हो सकते हैं। आर्यसमाजी बनने के बाद से हमने अपने जीवन में कभी फलित ज्योतिष पर विश्वास नहीं किया और हमें इससे हानि कुछ भी नहीं हुई अपितु लाभ अनेक हुए हैं। बच्चों की जितनी बौद्धिक क्षमता व परिवेश था उसके अनुसार उन्होंने शिक्षा प्राप्त की और सभी बच्चे स्वस्थ एवं पुरुषार्थरथ हैं। सभी आर्य विचारधारा को मानते हैं और मूर्तिपूजा एवं फलित ज्योतिष जैसे अन्धविश्वासों से पूर्णतः मुक्त हैं। बच्चों में किसी पर न कभी शनि की दशा आई और न किसी अन्य ग्रह ने कोई प्रकोप किया।

आज का युग विज्ञान का युग है। हम कोई काम करते हैं तो उसके सभी पहलुओं पर विचार कर निर्णय लेते हैं। निर्णय लेने में बुद्धि का ही प्रमुख योगदान होता है। ऋषि दयानन्द जी की कृपा से हमारे पास वेदज्ञान है। यह संसार परमात्मा ने जीवों के पूर्वजन्मों के कर्म फल प्रदान करने के लिये बनाया है। 'अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' के अनुसार जीवात्मा को अपने किये हुए प्रत्येक कर्मों के फलों को भोगना होता है। हमारे प्रारब्ध के अनुसार ही हमें सुख व दुःख प्राप्त होते हैं।

यह व्यवस्था वेद सम्मत एवं तर्क एवं युक्ति के अनुकूल है। फलित ज्योतिष का विधान वेद में न होने से वह त्याज्य है। संसार में यूरोप व अन्य देश भारत से कहीं अधिक भौतिक उन्नति को प्राप्त हैं। वहां भारत जैसे फलित ज्योतिष तथा मूर्तिपूजा को कोई नहीं मानता। यदि मानते तो वह भी भारत की तरह अविद्या एवं अविकसित देश होते। हमारे ऋषियों ने सभी विषयों पर ज्ञानपूर्ण रचनायें दी हैं। 6 दर्शन और 11 उपनिषदों के समान विश्व साहित्य में कोई ग्रन्थ नहीं है। फलित ज्योतिष का उनमें कहीं किंचित भी उल्लेख नहीं है। वेदानुकूल का ही प्रमाण होता है व उसे ही स्वीकार किया जाता है। फलित ज्योतिष से मनुष्य को कोई लाभ नहीं है अपितु हानि ही हानि है। वेदों के प्रकाण्ड विद्वान ऋषि दयानन्द ने भी फलित ज्योतिष को व्यक्ति एवं राष्ट्र के लिए अग्राह्य बताया है। हमें ऋषियों की आज्ञाओं व शिक्षाओं का पालन करना चाहिये। इसी से हमारी आर्य हिन्दू जाति को लाभ होगा।

सुई धागा

—महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

सुई और धागे की परस्पर मित्रता है। धागा सदा सुई के पीछे—पीछे चलता है। दोनों विभिन्न जातियें हैं। सुई जब अपने मित्र की छाती में छिद्र करती है तो धागा चुपचाप बिना कोई गिला दिए, मित्र को उसके दोष को बिना बतलाए छुपाता हैं अपने आप को अर्पण कर उस छिद्र को भरता आता है। ज्यों—ज्यों सूई छिद्र करती जाती है त्यों—त्यों धागा उसे भरपूर करता जाता है। यह है मित्रता। किसी के दोष या छिद्र को प्रकट न करो—उसे भरते जाओ, इसी में महानता है।

मित्र को भुला मत दो! चुपके छिद्र भरते जाओ!

तीन प्रकार की कड़वाहट

आधिभौतिक—करेला, नीम, विष।

आधिदैविक—कटु वचन, अश्लील, दुर्वचन (गाली गलौच)

आध्यात्मिक—ईर्श्या, द्वेष, द्रोह।

आर्यसमाज के महाधन

वैदिक धर्म एवं संस्कृति के अनन्य भक्त पं. चमपूति

—मनमोहन कुमार आर्य

वेद संसार की सबसे पुरानी पुस्तक है। वेद ही संसार के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य के धर्म विषयक ज्ञान के आदि स्रोत भी हैं। यह बात अनेक तर्क एवं युक्तियों से सिद्ध की जा सकती है। वेदों का इतर मत–पंथ के ग्रन्थों से तुलनात्मक अध्ययन भी इस बात की पुष्टि करता है। वेदों का ज्ञान मनुष्यों से आविर्भूत न होकर सृष्टि के रचयिता एवं पालक परमेश्वर से आविर्भूत है जिसका उद्देश्य मनुष्य मात्र का कल्याण एवं उसे धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष प्रदान कराना है। वैदिक धर्म एवं संस्कृति किसी एक जाति, मत व समुदाय की बपौती न होकर मनुष्यमात्र की साझा धर्म एवं संस्कृति है। वेदों का अध्ययन एवं वैदिक सिद्धान्तों का आचरण मनुष्य के ज्ञान को शून्य से शिखर पर ले जाता है। अतः सभी मनुष्यों को वेदाध्ययन एवं वैदिक धर्म का आचरण स्वार्थ से ऊपर उठकर ज्ञान व विवेकपूर्वक करना चाहिये। वेद एवं मत–मतान्तरों का अध्ययन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि यदि 5200 वर्ष पूर्व महाभारत युद्ध न हुआ होता तो संसार में एकमात्र वैदिक धर्म का ही अस्तित्व रहता। संसार में महाभारत के बाद जो अविद्यायुक्त मत प्रचलित हुए हैं, वह भी प्रचलित न होते। महर्षि दयानन्द महाभारत युद्ध के बाद ऐसे पहले ऋषि हुए हैं जिन्होंने विलुप्त वेदों व उसके सत्यार्थों का पुनरुद्धार करने के साथ वेद विषयक सभी भ्रान्तियों का निवारण किया। ऋषि दयानन्द ने समझाया है कि वेद

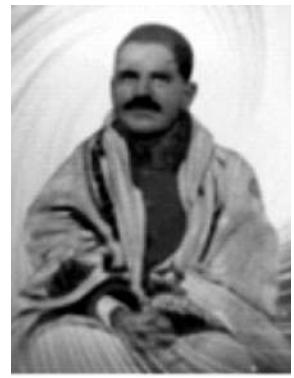

मनुष्य के धर्म एवं कर्तव्यों का मूल स्रोत व आधार है। वेदानुकूल मान्यतायें एवं सिद्धान्त ही धर्म एवं कर्तव्य हो सकते हैं। धर्म संज्ञा केवल वेदों व उनकी सत्य मान्यताओं की होती है। वेदों से इतर मनुष्यों द्वारा स्थापित व प्रचलित संस्थायें मत व पन्थ तो हो सकती हैं, परन्तु धर्म कदापि नहीं। ऋषि दयानन्द ने वैदिक मान्यताओं का प्रकाश करने और अविद्या को मिटाने के लिये सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ की रचना की थी जो अपने प्रयोजन में सफल रहा है। वैदिक विचारधारा एवं आर्यसमाज के वेद प्रचार की देन देश के प्रसिद्ध विद्वान पं० चमूपति जी थे।

महर्षि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व देश अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीतियों, सामाजिक बुराईयों तथा देश व समाज के प्रति अपने

कर्तव्यों से विमुख था। ऋषि दयानन्द ने वेद प्रचार का जो धर्मान्दोलन किया उससे देशवासियों ने वह लाभ नहीं उठाया, जितना उठाना अपेक्षित था। इसी कारण विज्ञान के वर्तमान युग में अविद्यायुक्त पुराने मत–मतान्तर न केवल प्रचलित हैं अपितु इनकी संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है। ऋषि दयानन्द की उनके विरोधियों द्वारा विषपान कराये जाने से सन् 1883 में मृत्यु हुई थी। उनके बाद उनके अनेक शिष्यों ने उनके वेदप्रचार आन्दोलन को तीव्र गति से आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया। अविद्यान्धकार को मिटाने का प्रयत्न किया जिससे देश व समाज से अज्ञान दूर हुआ व घटा तथा देश स्वतन्त्रता प्राप्त कर धीमी गति से उन्नति को प्राप्त हो रहा है। ऋषि दयानन्द की वैदिक विचारधारा को तीव्र गति से आगे बढ़ाने वाले उच्च कोटि के मनीषियों में पं. चमूपति जी का अग्रणीय स्थान है।

पं0 चमूपति जी का जन्म बहावलपुर के खैरपुर ग्राम में 15 फरवरी, सन् 1893 ई0 को एक प्रतिष्ठित मेहता परिवार में हुआ था। बहावलपुर स्थान अब पाकिस्तान में है। आपके पिता का नाम वसन्दाराम तथा माता का नाम उत्तमी देवी था। मैट्रिक तक की शिक्षा आपने अपने जन्म ग्राम खैरपुर में उर्दू एवं अंग्रेजी भाषाओं के माध्यम से प्राप्त की थीं। बहावलपुर के हार्दिक इजर्टन कालेज से आपने उर्दू, फारसी एवं अंग्रेजी में बी0ए0 किया। बी0ए0 तक आप देवनागरी अक्षरों से अनभिज्ञ थे। आर्यसमाज से प्रभावित होकर आपने संस्कृत में एम0ए0 करने का संकल्प लिया और परीक्षा में सफलता प्राप्त कर एक मेधावी युवक होने का प्रशंसनीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

विद्यार्थी जीवन में आप सिख मत की ओर आकर्षित हुए थे। आपने सिख मत की पुस्तक ''जपु जी'' का उर्दू में काव्यानुवाद किया था जिससे निकटवर्ती क्षेत्रों में आपको प्रसिद्धि और सम्मान प्राप्त हआ था। जन्म से दार्शनिक प्रवृत्ति के कारण तर्कहीन पौराणिक विचारधारा से आपकी सन्तुष्टि नहीं हुई जिसका परिणाम यह हुआ कि आप नास्तिक बन गए। इसके पश्चात आपने स्वामी विवेकानन्द के साहित्य का अध्ययन किया और उसके कुछ समय पश्चात महर्षि दयानन्द के साहित्य का दार्शनिक तर्क दृष्टि से अध्ययन किया। इस साहित्यिक ऊहापोह से आप पुनः आस्तिक बन गए। अब आप प्राणपण से आर्यसमाज के कार्यों में रुचि लेने लगे। सन् 1919 में आपने स्वामी दयानन्द के उर्दू जीवन चरित्र ''दयानन्द आनन्द सागर'' का प्रणयन किया जो कि कविता में है। इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद कर पं0 चमूपति जी के भक्त पं0 राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने इसका प्रकाशन भी किया है। इस ग्रन्थ में आपने स्वामी दयानन्द के लिए ''सरवरे मखलूकात'' अर्थात् 'मानव शिरोमणि' विशेषण का प्रयोग किया है। इस ग्रन्थ व इस विशेषण के कारण आपको मुस्लिम रियासत को छोड़ना पड़ा था। यह असहिष्णुता का एक वास्तविक उदाहरण था।

आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा संचालित दयानन्द सेवा संस्थान के भी आप सदस्य बने थे। संस्थान के समाजोत्थान के उद्देश्य को पूरा करते हुए आपने आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब द्वारा प्रकाशित अंग्रेजी

पत्र ''वैदिक मैगजीन'' एवं हिन्दी पत्र ''आर्य'' के सम्पादन का कार्य भी किया। आपकी विद्वता एवं वेदों में निष्ठा के प्रभाव से इन पत्रों ने अपूर्व सफलतायें प्राप्त कीं और यह देशभर में लोकप्रिय हुए। सन् 1926 से आरम्भ कर आठ वर्षों तक आपने गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार में उपाध्याय, अधिष्ठाता एवं आचार्य के पदों को सुशोभित किया। आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब की ओर से सन् 1925 में आप वैदिक धर्म एवं संस्कृति के प्रचारार्थ अफ्रीका यात्रा पर गये। इस अफ्रीका यात्रा में आपको भारतीय पौराणिक विद्वान पं0 माधवाचार्य ने शास्त्रार्थ के लिए आमंत्रित किया। पं0 माधवाचार्य का उद्देश्य पं0 चमूपति जी को अपमानित करना और अपने शिष्यों पर प्रभाव जमाना था। अनेक लोगों की उपस्थिति में शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। पं0 माधवाचार्य के एक प्रश्न के उत्तर में पं0 चमूपति जी ने शालीनतापूर्वक कहा कि पं0 माधवाचार्य की पत्नी को पुत्री मानने में उन्हें कोई आपत्ति नहीं, अपितु प्रसन्नता है। निराले अन्दाज में चमूपति जी द्वारा कहे गए इन शब्दों का लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। शास्त्रार्थ पं0 चमूपति के इन्हीं शब्दों पर समाप्त हो गया। इस शास्त्रार्थ से पं0 माधवाचार्य की पं0 चमूपति को अपमानित करने की योजना विफल हो गयी। उर्दू कवि एवं पाकिस्तान के विचार के जन्मदाता डॉ0 इकबाल एक बार पंडित चमूपति से मिलने गये। पं0 जी से बातचीत का डॉ0 इकबाल पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने पं0 चमूपति जी से आदरपूर्वक कहा कि आपके व्यवहार ने उन्हें अपने गुरु की स्मृति को ताजा कर दिया है।

एक दिन जब वह सरोवर के पास से गुजर रहे थे तो उन्होंने सरोवर में एक हिन्दू को मछलियां पकड़ते देखा। उनके मुख से निकला ''देखो! यह इस्लामी हिन्दू धर्म है''। एकबार एक व्याख्यान में पंडित ने मुसलमानों की हज की रीति नीति एवं व्यवहार का उल्लेख कर भावपूर्ण शब्दों में कहा था ''हज करते समय कोई मोमिन जूं तक नहीं मार सकता, सिला हुआ वस्त्र भी नहीं पहन सकता। यह है वैदिक इस्लाम''। इस्लाम के इस अहिंसक रूप के पं0 चमूपति जी प्रशंसक थे।

पं0 चमूपति जी संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, फारसी व अरबी के उच्चकोटि के विद्वान, लेखक, कवि एवं वक्ता थे। हिन्दी, उर्दू व अंग्रेजी में आपने अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया। सोम–सरोवर, जीवन–ज्योति, योगेश्वर कृष्ण, वृक्षों में आत्मा, हमारे स्वामी आदि हिन्दी, दयानन्द–आनन्द–सागर, मरसिया–ए–गोखले, जवाहिरे–जावेद, चौदहवी–का–चांद, मजहब–का–मकसद आदि उर्दू तथा महात्मा गांधी और आर्यसमाज, यजुर्वेद का अनुवाद, गिलिम्प्सेज आफ दयानन्द आदि आपकी अंग्रेजी की कुछ प्रसिद्ध कृतियां हैं।

ऋषि दयानन्द ने आर्यसमाज को कई स्वर्णिम नियम दिये हैं। एक नियम है कि मनुष्य को सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। सत्यार्थप्रकाश की भूमिका में उन्होंने लिखा है कि सत्य को मानना एवं मनवाना तथा असत्य को छोड़ना और छुड़वाना उन्हें अभीष्ट है। सत्य के ग्रहण को ही वह मनुष्य जीवन का लक्ष्य स्वीकार करते थे। पं0 चमूपति ने ऋषि दयानन्द जी के

विचारों को सर्वात्मा अपनाया और उनका प्रचार किया। 15 जून सन् 1937 को 44 वर्ष की आयु मे ंपंडित चमूपति जी ने अपने नश्वर शरीर का त्याग किया। पं0 जी ने वेदप्रचार का जो कार्य किया और उच्च कोटि के ग्रन्थों की रचना की है, उसके कारण उनका नाम व यश सदा अमर रहेंगे।

पं0 जी की सत्यनिष्ठा का एक उदाहरण प्रस्तुत कर हम इस लेख को विराम देंगे। एक बार पं0 चमूपति जी अपनी पत्नी एवं पुत्र के साथ रेल से यात्रा कर रहे थे। टिकट परीक्षक आया और उसने पंडित जी से टिकट मांगे। पण्डित जी ने दो टिकट लिये थे। परीक्षक ने बच्चे की आयु पूछी तो पंडित जी ने उसकी जन्म तिथि के आधार पर गणना कर कहा कि आज इसने पांच वर्ष पूरे किये हैं और इसका छठा वर्ष आरम्भ हुआ है। टिकट परीक्षक ने कहा कि नियमानुसार आपको इस बच्चे का आधा टिकट लेना चाहिये था। पण्डित जी ने अपनी इस भूल के लिये खेद प्रकट किया और टिकट परीक्षक को टिकट की धनराशि और जुर्माना लेने को कहा। टिकट परीक्षक ने कहा कोई बात नहीं, आज छठे वर्ष का पहला दिन है। पंडित जी नहीं माने और उन्होंने अपनी गलती का भुगतान टिकट एवं दण्ड राशि का भुगतान करके किया। इसका टिकट परीक्षक पर यह प्रभाव हुआ कि वह आर्यसमाज और पण्डित जी का भक्त बन गया। इस घटना से आर्यसमाज के अनुयायियों को भी शिक्षा लेनी चाहिये और आत्मालोचन कर सत्य मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिये। हम ईश्वरभक्त, वेदभक्त और ऋषिभक्त पं0 चमूपति जी को उनके गौरवमय जीवन एवं कार्यों को स्मरण कर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

पञ्च-पञ्चक

इन्द्रियाँ	इन्द्रिय-द्रव्य	इन्द्रिय-स्थान	इन्द्रिय-विषय	इन्द्रिय-बुद्धियाँ
1. श्रोत्र (कान)	आकाश	कर्णौ (दोनों कान)	शब्द (Sound)	श्रोत्रबुद्धि
2. स्पर्शन (त्वचा)	वायु (हवा)	त्वक् (त्वचा)	स्पर्श (Touch)	स्पर्शबुद्धि
3. चक्षु (आंख)	ज्योति: (तेजस्)	अक्षिणी (दोनों आंख)	रूप (Shape)	चक्षुर्बुद्धि
4. रसना (जिह्वा)	अप् (जल)	जिह्वा (जीभ)	रस (Taste)	रसनबुद्धि
5. घ्राण (नासिका)	भू (पृथ्वी)	नासिके (दोनों नथुने)	गन्ध (Smell)	घ्राणबुद्धि

इस प्रकार ये पच्चीस महत्वपूर्ण तत्व हैं, इन्हें आयुर्वेद में 'पंच पंचक' के नाम से जाना जाता है।

मनोवृत्तियां सोम रस

–वीतराग महात्मा प्रभु आश्रित जी महाराज

गउएँ–गोपाल

१. गउएं–तीन प्रकार की होती हैं, जिन्हें वैदिक परिभाषा में गो कहा जाता है।

आधिभौतिक गो–शरीरी गाय–पशु।
आधिदैविक गो–ब्रह्मण्डी गाय–सूर्य चन्द्र पृथ्वी
आध्यात्मिक गो–मनोवृत्तियां

खुरली–(२) मनुष्य की मनोवृत्तियां गौवें हैं–उनकी बाड़ शरीर, बन्धने और खुरली का स्थान पृथक–पृथक इन्द्रियों के गोलक चक्षु, श्रोत्र, नासिका, जिह्वा, मूत्रेन्द्रिय हैं। सब को अपने–अपने स्थान पर आहार मिलता है। सबका आहार गोपाल जानता है।

गोपाल–(३) जीवात्मा गोपाल है। जैसे बाहर की शरीरी गौओं की सुरक्षा, पालन, पोषण, दोहन किया जाता है। ऐसे ही मनोवृत्ति रूपी गउओं के लिए चाहिए स्वच्छ, सुन्दर, पवित्र भोजन, पवित्र स्थान। आंख का स्थान शुद्ध पवित्र सुन्दर होना चाहिए। यह नहीं कि सुरमे से पवित्र किया जाए–सुन्दर बनाया जावे, अपितु आचार से शुद्ध पवित्र बनाया जावे। ऐसे ही श्रोत्र, जिह्वा आदि का स्थान पवित्र हो, आहार, रुप, रस, शब्द, गन्ध, पवित्र स्वच्छ हों, अश्लील, गन्दी, धर्मविहीन न हों।

खट्टर गौ–(४) जैसे शरीरी गउएं खट्टर होती हैं। खाती पीती तो खूब हैं–पर जब गवाले के दोहने का समय आता है तो दौड़ जाती हैं, लात उठा लेती हैं। जो ग्वाला कायर होता है वह तो गऊ के लात मारने के भय से, पूँछ के चाबुक लगने के भय से, अमृत रस(दूध) नहीं ले सकता।

डंडा–वंग–रस्सा–गांठ

पर जो चतुर है वह डंडा हाथ में रखता है, और उसी से मोड़कर, एक कीले पर बांध, वंग(ढंगा) डाल कर दोह लेता है। ऐसे ही मनुष्य की मनोवृत्ति रूपी गौएं खट्टर और लात मारने वाली हैं। आंख, कान, नाक, मुख रूपी द्वार बंद करने पर भी वे गऊएं (वृत्तियां) बाड़ (शरीर) से भी बाहर द्वार से कूदकर भाग जाती हैं, और गोपाल(जीवात्मा) भी उनके पीछे–पीछे भागता है। जब समय दोहने का, अमृत सोम रस लेने का, सायं प्रातः प्रभु भक्ति संध्या का आता है–निर्बल, कायर गोपाल(जीव) बिना डंडे के भागता ही रहता है, और सोम रस नहीं दोह सकता। जिस उपासक गोपाल के पास युक्ति–दण्ड(डंडा) प्रतीत होता है वह तो तत्काल गायों(वृत्तियों) को ले आकर अपने– अपने स्थान पर, विश्वास के कीले से बांध देता है और वंग(यत ब्रह्मचर्य का रस्सा) और सत्य की गांठ से गउओं की लातों को वश में कर सोम रस दोह लेता है।

दोहनी–(५) बिना जत सत (यत) के वंग के कभी मनोवृत्ति रूपी गाय नहीं जा सकती। वश नहीं की जा सकती।

(६) चित्त एक बर्तन है–जिसमें यह सोम रस दोहना है।

(७) जिस भक्त (गोपाल) की गउएं सुधरी हुई और असील(सरल स्वभाव) होती हैं वह बिना वंग डाले, खुले दरवाजे दोह लेता है।

वंशीधर गोपालकृष्ण–(८) और जिस गोपाल (जीव) पर गउएं स्वयं मोहित–आकृष्ट हैं, वह केवल बांसुरी का नाद बजाता है, तो अपने आप गउएं, नशे में मस्त उस के पास आ ठहरती हैं, और दूध अमृत रस स्वतः टपकने, बहने लग जाता है। गोपाल (भक्त) को कोई भी परिश्रम नहीं करना पड़ता।

समर्पणः प्रत्येक मनुष्य संध्या के समय यदि एक मिनट भी प्रतिदिन अपने आपको ईश्वरार्पण करके मन को विचारशून्य कर देवे तो बहुत शीघ्र उसे अमृत रस की मस्ती उपलब्ध होने लगेगी।

बसन्त कुमार विस्वास

–स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज

23 दिसम्बर 1912 को ब्रिटिश भारत के वायसराय लॉर्ड चार्ल्स हार्डिंग अपनी नयी राजधानी ''नई दिल्ली'' में प्रवेश कर रहे थे। वायसराय और उनकी पत्नी हाथी की सवारी कर रहे थे। विशाल काफिले में ब्रिटिश सैनिक, अर्धसैनिक बल, पुलिस, प्रशासनिक अधिकारी, सैकड़ों गण्मान्य व्यक्ति, नेता आगे–पीछे चल रहे थे। बैण्ड बाजा था। जैसे ही वायसराय का काफिला चाँदनी चौक के पास धुलिया कटरा के सामने पहुँचा, भीड में से एक बम उछला और वायसराय के हाथी पर गिरा। महावत की वहीं मौत हो गई पर बम को असली निशाना रहे वायसराय की कमर, पैर, सिर और कन्धे पर खरोंचे भर आई। वायसराय की पत्नी की ड्रैस को पिक्रिक एसिड ने झुलसा दिया था। बाद में वैलंटाइन चिरोल ने ''द इण्डियन अनरैस्ट'' नामक पुस्तक में लिखा–''इस बम के धमाके कभी रूके नहीं!''

ब्रिटिश सम्राज्यवाद के काफिले पर यह बम फेंकन वाला युवा क्रान्तिकारी बसन्त कुमार बिस्वास उस समय सत्रह वर्ष का था। बसंत कुमार विस्वास का जन्म 06 फरवरी 1895 में बंगाल के नदिया जिले के पोरगाछा में हुआ था। अमरेन्द्र चट्टोपाध्याय व रासबिहारी बोस जैसे ''जुगान्तर समिति'' के क्रान्तिकारियों ने बिस्वास की राष्ट्रभक्ति देखकर इन्हें क्रान्ति का मार्ग दिखाया। जब रासबिहारी वायसराय पर हमले की योजना बना रहे थे तो उन्होंने साथी क्रान्तिकारियों से एक ऐसा नवयुवक ढूँढने को कहा जो अपना जीवन बलिदान करने के लिये तैयार हो। बसंत को उनसे मिलवाया गया। बसंत को लेकर रासबिहारी देहरादून आये और दोनों लगभग एक वर्ष तक एक बाग में फल उछालकर हाथी जितनी ऊँचाई तक बम का निशाना लगाने का अभ्यास करते रहे। वायसराय हमले के दिन रिक्शा में बसंत स्त्रीवेश में थे। फिर ये पुरुष वेश में कपड़े बदल आये और बम फेंका। वायसराय पर बम हमले के बाद ब्रिटिश पुलिस ने क्रान्तिकारियों पर दमन चक्र तेज कर दिया तथा इसी सिलसिले में मास्टर अमीरचन्द, अवध बिहारी, बाल मुकुन्द पकड़े गये। रासबिहारी बोस का पुलिस को पता नहीं चला जबकि ''बम फेंकने वाली स्त्री'' को पुलिस ढूँढती रही। फिर सुराग लगा कि स्त्री के वेश में बसंत ने बम फेंका था। इस बारे में कभी अधिकारिक बयान नहीं आया कि बम किसने फेंका था। जब बसंत अपने पिता का अन्तिम संस्कार करने घर आये तो पुलिस ने 26 फरवरी 1914 को इन्हें पोरगाछा से गिरफ्तार कर लिया। 23 मई 1914 को इनका मुकदमा शुरू हुआ व 05 अक्टूबर 1914 को इन्हें उम्रकैद की सजा सुनाई गई क्योंकि अदालत की नजर में घटना के वक्त ये नाबालिग थे। इस पर सरकार ने लाहौर हाईकोर्ट में फाँसी की अपील दायर की और अम्बाला सेन्ट्रल जेल के रिकार्ड में फेरबदल कर कागजों में इनकी उम्र दो वर्ष बढ़वा दी ताकि इन्हें बालिग दिखाया जा सके। 11 मई 1915 को अम्बाला सेन्ट्रल जेल में इस युवा क्रान्तिकारी को फाँसी दे दी गई। बाद में अपने टोक्यो प्रवास के दौरान रासबिहारी बोस ने तेत्सु कोंग हिओची नामक बगीचे में इनका स्मृति चिन्ह स्थापित कराया।

किसी ग्रन्थ के ईश्वरीय ज्ञान होने की अनिवार्य कसौटियाँ/मानदंड व शर्तें

—आचार्य आशीष आर्य, वैदिक साधन आश्रम

सत्य मार्ग के पथिक के मनमंदिर में भी कभी—कभी जिज्ञासावशात् संशयों की आंधी आना स्वाभाविक है। संशय तत्वज्ञान की प्राप्ति में अत्यंत सहायक हैं, यदि प्रमाणों के आधार पर उनका निराकरण उचित समय में कर लिया जाये। किस ग्रन्थ व ज्ञान को ईश्वरीय माने ? यह यक्ष प्रश्न भी कभी न कभी जिज्ञासु के समक्ष उपस्थित होता ही है।

निम्नलिखित कसौटियों के विषय में सुलझी हुई सोच आपको सत्य निर्णय तक पहुंचाने में सहायक होगी। आइये कसौटियों को क्रमशः गम्भीरतापूर्वक हृदयंगम् करें।

1. ईश्वरीय ज्ञान किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं अपितु मनुष्य मात्र के लिए रंग—रूप, जाति आदि के भेद—भाव के बिना ईश्वर द्वारा दिया जायेगा क्योंकि ईश्वर मनुष्य मात्र के माता—पिता, हितैषी व न्यायकारी हैं।

2. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में प्रथम मनुष्य पीढ़ी में ही दिया जायेगा, जिससे पीढ़ी दर पीढ़ी ईश्वरीय ज्ञान प्रवाहित होता हुआ मनुष्य मात्र के लिए उपलब्ध हो सके। ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में ही दिया जायेगा, मध्य में नहीं। क्योंकि मध्य में दिये जाने पर वह मनुष्य मात्र के लिए उपलब्ध नहीं हो सकेगा। उस ज्ञान के कभी मध्य में आने से पूर्व की मनुष्य पीढ़ियां ईश्वरीय ज्ञान से वंचित ही रहेंगी और ईश्वर पक्षपाती सिद्ध होंगे।

3. ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के प्रारम्भ में प्रथम मनुष्य पीढ़ी में आना सिद्ध होने से यह स्पष्ट है कि ईश्वरीय ग्रन्थ/पुस्तक में किसी भी प्रकार के मनुष्यों व किसी देश का इतिहास नहीं होगा।

4. ईश्वरीय ज्ञान सबसे प्रारम्भ में जिस भाषा में आयेगा, वह भाषा अन्य सभी भाषाओं की मातृभाषा सिद्ध होगी।

5. ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य को सर्वांगीण रूप से विकसित करने वाला होने से आध्यात्मिक व भौतिक सभी प्रकार की विद्याओं का स्रोत होगा। अतः ईश्वरीय ग्रन्थ/पुस्तक में सभी प्रकार का भौतिक विज्ञान (साइंस) भी मूल रूप में अवश्य विद्यमान होगा।

6. चूँकि ईश्वर ही सृष्टि के रचयिता व

ईश्वरीय ज्ञान के देने वाले हैं, अतः सृष्टि जैसी है उसका वैसा ही विवरण ईश्वरीय ग्रन्थ में होगा, विपरीत नहीं।

7. ईश्वरीय ग्रन्थ मनुष्यों को एकमात्र सच्चे धर्म मनुष्यता/मानवता का ही उपदेश देने वाला होगा। वह मनुष्यों को श्रेष्ठ मनुष्य बनने मात्र की प्रेरणा देने वाला होगा न कि उनको विभिन्न वर्गों हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि में बाँटने वाला होगा।

8. ईश्वरीय ग्रन्थ की सभी बातें तर्क की कसौटी में भी सत्य ही प्रमाणित होंगी।

9. ईश्वरीय ज्ञान धर्म व अध्यात्म के नाम पर प्रचलित सभी गलत परम्पराओं, मान्यताओं व अन्धविश्वासों का निराकरण करने वाला तथा युक्तियुक्त सिद्धान्तों व नियमों का प्रतिपादन करने वाला होगा।

10. तीनों नित्य, अनादि तत्वों ईश्वर, जीव व प्रकृति का यथावत् सत्य–सत्य विवरण ईश्वरीय ग्रन्थ में होगा।

11. पूर्ण परमात्मा का ज्ञान होने से ईश्वरीय ज्ञान मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति एवं जीवन लक्ष्य प्राप्ति हेतु सभी प्रकार से सक्षम व पूर्ण होगा। अतः उसमें किसी भी प्रकार के संशोधन, परिवर्धन की आवश्यकता नहीं होगी।

उपर्युक्त इन ग्यारह कसौटियों पर वेद, कुरान, बाइबिल, रामायण, गीता, महाभारत व पुराण आदि को कस कर देखने से आप सरलता से समझ सकेंगे कि ईश्वरीय ज्ञान केवल वेद ही हैं। कुरान लगभग 1400 वर्ष, बाइबिल लगभग 2100 वर्ष, गीता लगभग 5000 वर्ष और रामायण त्रेतायुग के अंत में लगभग 9 लाख वर्ष पुराना है। जबकि चार वेदों ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा नामक ऋषियों के हृदयों में दिया। इन चार ऋषियों से आगे ब्रह्मा ऋषि व अन्य ऋषियों तक फैलते हुए यह ज्ञान मनुष्य मात्र तक पहुँचा। वेदों में किसी मनुष्य व देश का इतिहास न होना तथा वेद की भाषा वैदिक संस्कृत का अन्य सभी भाषाओं की मातृभाषा सिद्ध होना वेदों के सृष्टि के प्रारम्भ में आने को विशेष रूप से सिद्ध करता है।

ईश्वरीय होने से वेदों का ज्ञान विशुद्ध, प्रमाणिक व भ्रान्तिरहित है। वेदों को समझने के लिये प्रथम महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के दो ग्रंथों ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका व सत्यार्थ प्रकाश को अच्छी प्रकार से पढ़ना आपके लिए विशेष सहायक होगा।

आप वेदों को अवश्य पढें ऐसा कहने में यह तात्पर्य कदापि नहीं है कि आप अन्य ग्रंथों को न पढ़ें। आप अन्य ग्रंथों से भी अच्छी बातों का ग्रहण करें, परन्तु वेदों के ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण उनमें ही अधिक परिश्रम करने का प्रयास करें, यही अभिप्राय है।

आइये, अब लौट चलें वेदों की ओर.....

धन पास रखने में सुख है या त्याग करने में

–महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी

दूर की यात्रा थी। मार्ग में जंगल थे, नदियाँ थीं, मरुस्थल थे और झीलें थी। ऐसी जान–जोखिम की यात्रा में गुरु और शिष्य पैदल ही चले जा रहे थे। यात्रा आनन्द से कट रही थी कि बातों–बातों में गुरु और चेले के मध्य यह वाद–विवाद छिड़ गया कि धन का त्याग अच्छा है या संग्रह करना।

गुरु अपने लम्बे भाषण में इस बात के तर्क देता था कि त्याग ही अच्छा है। त्याग से ही सुख मिलता है। धन का संग्रह करना लाख दुःखों को इकट्ठा करना है। पहले तो संग्रह करने में परिश्रम करना, दुःख झेलना, बेईमानी करना, सौ छल–कपट करना, फिर इसकी सुरक्षा में जान जाने का भय, दिन–रात चुराये जाने का भय, न सोने का सुख, न भ्रमण का आनन्द। यदि चला जाए तो प्राण भी ले–जाए। ऐसे धन का संग्रह करने से तो उसका त्याग ही अच्छा है।

शिष्य–चेला अपने व्याख्यान में इस सिद्धान्त पर बल देता था कि ''धन संग्रह करना अत्यन्त लाभदायक है। धन–संग्रह करने के अनेक लाभ हैं। जिसके पास धन होता है लोग उसका सम्मान करते हैं। उसे उच्च–से–उच्च पद प्रदान करते हैं, झुक–झुककर नमस्कार करते हैं। सब लोग उससे डरते हैं। फिर देखो! धन आराम के सारे साधन उपलब्ध कराता है। इससे प्रत्येक प्रकार का सुख मिलता है। चोर का भय हो तो चौकीदार रखे जाते हैं। मेरा पूर्ण विश्वास है कि धन संग्रह करना अत्युत्तम काम है। जो लोग अपने पास धन नहीं रखते, वे दुःख में पड़े रहते हैं। क्या आप नहीं देखते कि निर्धन किस प्रकार दुःख उठाते हैं।''

गुरु ने फिर कहा–''पुत्र! गलत मार्ग पर चल रहा है। फिर सुनो, और समझो कि सुख धन के त्याग में है, संग्रह करने में नहीं।''

चेले ने कहा आपसे कौन सिर फोड़े। आपने तो एक ही रट पकड़ रखी है।

यह बातचीत यहीं समाप्त हो गई और एक छोटे से जंगल के पश्चात् एक छोटी–सी नदी मार्ग में आ गई। गुरु और शिष्य दोनों किनारे पर पहुँचे। नौका विद्यमान थी। चेले ने झट से अपनी अण्टी में से दो पैसे निकाले और नौका पर सवार होकर किनारे के दूसरी ओर पहुँचकर जोर से चिल्लाकर गुरु को कहने लगा–कहो गुरुजी! सुख धन जमा करने में है या त्याग करने में। अब भी आप समझे या नहीं?

गुरु–मूर्ख! क्यों उलटी बातें करता है। सोच और समझ कि जब तक पैसा तेरे पास था तब तक तू नदी के इस किनारे पर था, परन्तु जब तूने पैसे का त्याग किया तभी तू पार पहुँचा।

चेले ने जब इस पहेली को समझा तब उसे अपने दर्शन पर पश्चात्ताप हुआ और गुरु को नमस्कार किया।

वस्तुतः सुख त्याग में है। सम्मान उसी धनिक का होता है, जो अपना रुपया अच्छे कामों में खर्च करता है अथवा श्रेष्ठ कामों के लिए अपने धन का त्याग करता है। बस, असली सुख त्याग में है, न कि धनकंजूसों की भाँति संग्रह करने में। जो लोग चेले की भाँति इस पहेली को समझ लेते हैं, वे सत्य को पा लेते हैं।

आर्य समाज

–आर्य रविन्द्र कुमार

वेदों में इतिहास नहीं है:

जिन ग्रंथों का प्रादुर्भाव सृष्टि के आरम्भ में हुआ हो उनमें कोई भी इतिहास होने की संभावना स्वतः ही समाप्त हो जाती है। चारों वेदों में चार विषय हैं, विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान। वेद सार्वदेशिक, सार्वभौमिक, सार्वकालिक व सार्वजनिक हैं। अतः चारों वेदों में किसी काल–विशेष या देश–विशेष का कोई इतिहास अथवा भूगोल नहीं है।

भारतीय प्राचीन इतिहास में बहुत से स्थानों, व्यक्तियों, पशु–पक्षियों, संस्थाओं, भौतिक पदार्थों व नदियों और पहाडों के नाम वेदों से ही लेकर रखे गये। जिस प्रकार हम आज भी अपनी संतानों के नाम प्राचीन महापुरुषों के नाम पर रखते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि उस युग में वेदज्ञान का प्रचार और प्रसार था। इस सत्य को मनु महाराज ने जो एक ऋषि थे और विश्व के प्रथम राज्य– व्यवस्था के संचालित करने वाले थे, लिखा है–

सर्वेशां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवाऽऽदौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे।।

अर्थात् आदिकाल में वेद के शब्दों से ही सब नाम, क्रियायें तथा पृथक्–पृथक् संस्थायें बनाई गयी। आज भी वेदों को जानने वाले अपनी संतानों का नाम वेद में से चुन कर रखते हैं। यही इस बात को प्रमाणित करता है कि शब्दों में एकरूपता होने से यह सिद्ध नहीं होता कि वेदों में कोई इतिहास है।

वेदों में अधिकतर यौगिक शब्दों का प्रयोग हुआ है जिस कारण साधारण व लौकिक संस्कृत के ज्ञानीजन मंत्रों के वास्तविक भावार्थ तक नहीं पहुँच पाये। अतः उन्होंने उनके साधारण अर्थों को सामने रखकर वैदिक मंत्रों की अद्वितीयता को समाप्त करते हुए निरर्थक अर्थ किये और उनके वास्तविक ज्ञान को लुप्त कर दिया। इसी प्रकार विदेशी अंग्रेज व जर्मन विद्वानों ने भी यही कार्य किया जैसे विलियम जोन्स, ग्रिफीथ, मैक्समूलर, व्हीलर, मैक्डानल्ड, स्मिथ आदि। उन्हीं का अनुसरण करते हुए कुछ भारतीय इतिहास लेखकों (जैसे दामोदर धर्मानन्द कौशाम्बी, रमेश चन्द्र मजूमदार, हेमचन्द्र राय चौधरी, राम शरण शर्मा, सतीश चन्द्र, विपिन चन्द्र, इरफान हबीब, रोमिला थापर, डी०एन० झा आदि) ने उन्हीं विदेशियों द्वारा लिखित अनर्थों को सम्मान देकर इतिश्री कर ली, स्वयं इतिहास की खोज नहीं की। यह तो वही बात हुई ''कहीं का पत्थर कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुन्बा जोड़ा''।

वेदों सहित सम्पूर्ण ज्ञान समस्त मानव (स्त्री व शुद्र सहित) जाति के लियेः

वेदों की शिक्षा सार्वभौमिक है तथा समस्त मानव जाति के लिये है। वेद ने मानव को संस्कृत भाषा के साथ–साथ तीनों प्रकार की उन्नति की शिक्षा दी है, जिससे सम्पूर्ण मानव जति को शारीरिक, मानसिक व आत्मिक बल प्राप्त हो। सभी साथ–साथ मिल कर चलें, सभी के मन और चित्त एक हों। सभी परस्पर द्वेष–रहित होकर एक–दूसरे से प्रेम करें, कल्याण लाने वाली वाणी के साथ बातचीत करें। चारों वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य व शूद्र) के व्यक्ति परस्पर व्यवहार करते हुए अग्निहोत्र करें।

वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना, सुनना–सुनाना समस्त मानव जाति (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य, शूद्र, अतिशूद्र, अनपढ़, बनवासी इत्यादि तथा समस्त नारी वर्ग) का परम धर्म है। मनुस्मृति में इसका कोई विरोध नहीं है। वेद के स्वाध्याय से ही मानव जाति का कल्याण व भारत राष्ट्र का उत्थान संभव है।

परमेश्वर का आदेश है कि उसने सब मनुष्यों के कल्याण और मुक्ति के देने हारी ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का उपदेश दिया है। यजुर्वेद के छब्बीसवें अध्याय का दूसरा मंत्र है–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यॉं शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं में कामः समृध्यतातुप मादो नमतु।।

परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिये (इमाम्) इस (कल्याणीम्) कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने हारी (वदचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी का (आ वदानि) उपदेश करता हूँ वैसे तुम भी किया करो। हमने ब्राह्मण, क्षत्रिय, (अर्याय) वैश्य, (शूद्राय) शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य व स्त्रियादि (अरणाय) और अतिशूद्रादि के लिये भी वेदों का प्रकाश किया है अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़–पढ़ाकर और सुन– सुनाकर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करके दुःखों से छूट कर आनन्द को प्राप्त हों।

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य ओर संबन्धियों का मुख्य कर्म है।

वेद भगवान् ने यजुर्वेद (२/३३) में उपदेश किया है–

''आधत्त पितरो गर्भ कुमारं पुष्करस्त्रजम्। यथेह पुरुषोऽसत्।।''

ईश्वर की आज्ञानुसार सकल जगत् के सब स्त्री तथा पुरुषों में जितने भी विद्वान् है, वे सब विद्यार्थी कुमारों को (विद्या प्रदान करने के लिये) इस प्रकार अपने गर्भ में धारण करें, जिस प्रकार स्त्री अपने गर्भ को धारण करती है।

आयुर्वेदिक चिकित्सा

–डॉ० भगवान दास

मुँह से रक्त आना

इस रोग में खांसी के दौरान रोगी के मुँह से रक्त आता है। मुख्य रूप से यह रक्त क्षय रोग (टी०बी०) और फेफड़ों के कैंसर जैसे रोगों में आता है। आयुर्वेद में इस रोग की गणना ऊर्ध्व रक्त पित्त की श्रेणी में आने वाले रोगों में की गई है। रोगी खाँसी करते–करते मुंह से रक्त थूकता है। कई बार बलगम के साथ ही रक्त आता है।

उपचार– इस रोग के उपचार के लिय वासा या वासक नामक औषधि (जड़ी–बूटी) उत्तम मानी गई है। इसका प्रयोग रस निकालकर किया जाता है। इसकी पत्तियों का रस दो चम्मच की मात्रा में दिन में चार बार रोगी को पिलाना चाहिए। इसका स्वाद कड़वा होता है, अतः शहद मिलाकर ही देना चाहिए।

प्रवाल से तैयार की गई प्रवाल पिष्टी नामक औषधि इस रोग के उपचार के लिए बहुत उपयोगी है।

अन्य आचार–व्यवहार– इस रोगी को पूरा आराम करना चाहिए, किसी भी प्रकार का शारीरिक श्रम करना उसके लिए हानिकारक है। धूप में बैठना व घूमना भी मना है।

हिचकी

इस रोग में अंदर की ओर श्वास खींचने (प्रश्वास) के साथ एक तेज व तीखी आवाज उत्पन्न होती है। यह आवाज कंठद्वार और मध्यपट में ऐंठन के साथ–साथ उत्पन्न होती है। आयुर्वेद में इस रोग को हिक्का रोग कहा जाता है। इस रोग के कारण के रूप में अलग–अलग दोष पाए जाते हैं। इन्हीं दोषों के आधार पर रोग के लक्षण भी भिन्न–भिन्न प्रकार के मिलते हैं।

उपचार– इस रोग की चिकित्सा के लिए सबसे अच्छी औषधि मोर के पंख की राख (मयूर चंद्रिका भस्म नाम से बाजार में उपलब्ध) मानी गई है। इस राख या भस्म को 125 मि.ग्रा. की मात्रा में, शहद के साथ मिलाकर दिन में छः बार रोगी को सेवन कराना चाहिए। एलादि वटी भी इस रोग की अच्छी औषधि है और इसका प्रयोग बहुत लोकप्रिय भी है। इसमें महत्वपूर्ण द्रव्य इलायची है। इसकी एक–एक गोली दिन में छः बार शहद के साथ मिलाकर चूसने के लिए देनी चाहिए। हिचकी रोग में वायु ऊपर की ओर जाती है। वायु की इस उल्टी गति को शांत करने के लिए सुकुमार घृत का सेवन करना चाहिए। एक छोटे चम्मच की मात्रा में, दूध के साथ दिन में तीन बार इसका सेवन कराना चाहिए।

आहार–हिचकी रोग के लिए कुलत्थ बहुत लाभदायक है। इसका रस, सूप और दाल बनाकर रोगी को दिया जा सकता है। पुराने चावल, परवल, कोमल मूली, नींबू, गाय का दूध व लहसुन का सेवन भी ऐसे रोगी के लिए अच्छा माना जाता है। वसायुक्त भोजन, भारी और ठंडे खाद्य–पदार्थ और उड़द की दाल इस रोग के लिए हानिकारक हैं।

अन्य आचार विचार–यदि हिक्का रोग मनस्तंत्रिका संबंधी विकारों के कारण उत्पन्न हुआ हो, तो ऐसे रोगी का इलाज मानसिक चिकित्सा द्वारा करना चाहिए। हिक्का के रोगी को आराम देना चाहिए। इस रोगी को शरीर की स्वाभाविक इच्छाओं (मल, मूत्र, छींक आदि) को किसी भी रूप में दबाकर नहीं रखना चाहिए अर्थात् इन इच्छाओं की पूर्ति उचित समय पर साथ–साथ होती रहनी चाहिए।

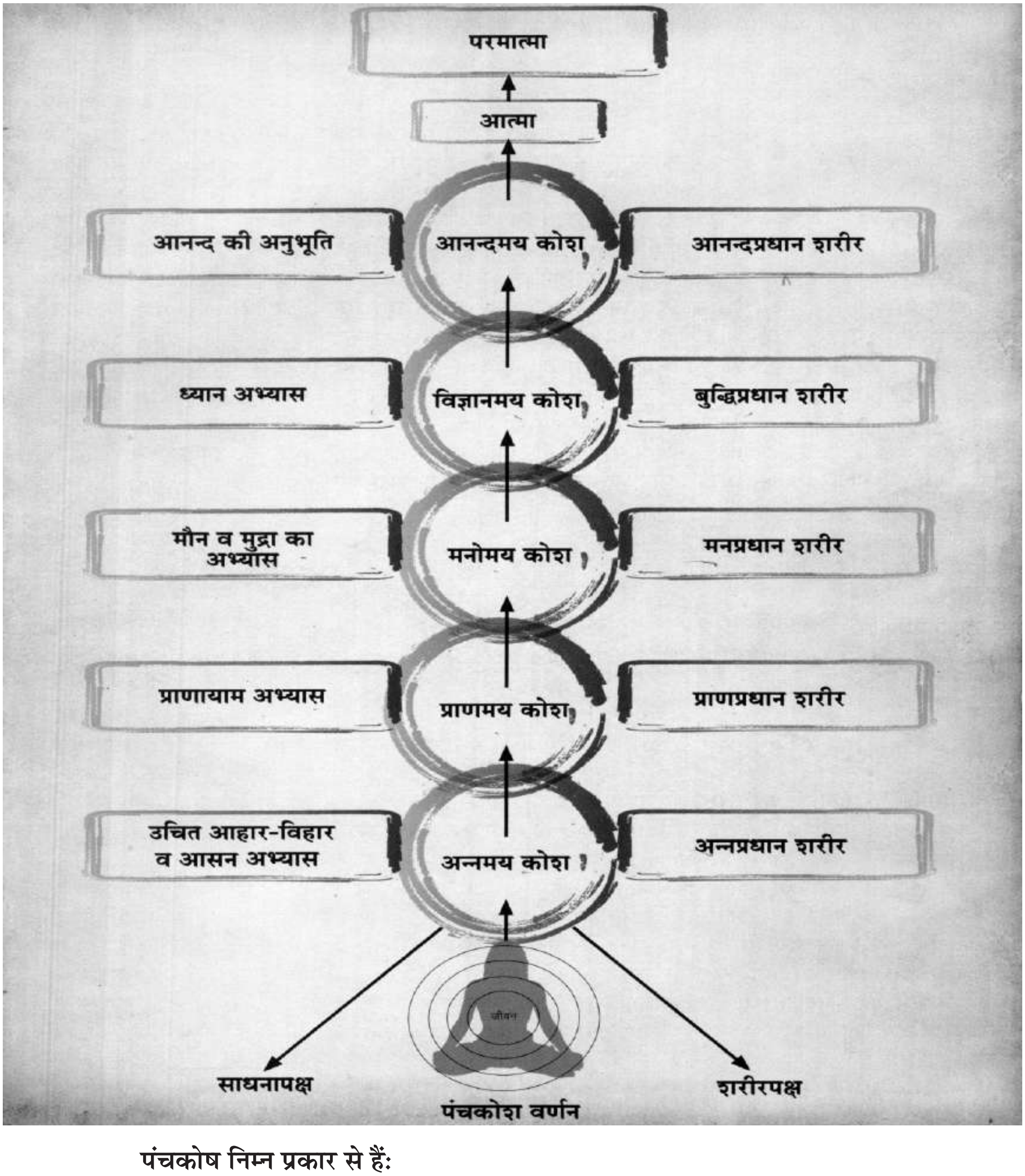

पंचकोष निम्न प्रकार से हैं:

अन्नमय कोष: शरीर के स्वास्थ्य व रोग का सम्बन्ध मुख्यतया अन्नमय कोष से ही है।

प्राणमय कोष : देह की शक्ति व ऊर्जा का स्रोत प्राणमय कोष है।

मनोमय कोष : इसमें संयम से सकल कर्मेन्द्रियों और उनकी शक्तियों का बोध होता है।

विज्ञानमय कोष : निर्णय की शक्ति को विज्ञानमय कोष कहा गया है।

आनन्दमय कोष : इसमें सम्पूर्ण तत्व व यथार्थ बोध का ज्ञान होता है।

तपोवन आरोग्यधाम एवं दिव्य आध्यात्मिक शक्ति

—वैदिक साधन आश्रम तपोवन नालापानी, देहरादून

भोजन के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी

जीवन चलाने के लिए हम जो कुछ खाते हैं, वह भोजन है। यह कितनी विडम्बना है कि जो क्रिया हम जन्म से लेकर पूरे जीवन भर प्रतिदिन कई बार करते हैं, उसके बारे में हमें कितनी कम जानकारी है। भोजन के बारे में कुछ आवश्यक जानकारी इस प्रकार हैंः—

1. सही समय पर, सही मात्रा में व सही गुणवत्ता का शाकाहारी भोजन लें, इसी को युक्ताहार कहते हैं। बीच—बीच में न खायें। खाने में अन्तर रखें।
2. भूख लगने पर ही भोजन करना चाहिए।
3. भोजन करते समय आधा अमाशय अन्न या ठोस पदार्थ से भरना चाहिए। चौथाई पानी के लिए तथा चौथाई हवा के लिए जगह रखनी चाहिए।
4. भोजन खूब चबा—चबा कर करना चाहिए और मौन होकर करना चाहिए।
5. भोजन करते समय मन शान्त हो। यदि किसी कारण मन में क्रोध या अशान्ति है तो पहले उसे दूर करके ही भोजन करना चाहिए अन्यथा कब्ज हो जायेगा।
6. भोजन आयु, काम, मौसम, व्यक्तिगत रूचि, स्थान विशेष पर भोजन सामग्री की उपलब्धता, साधन का स्तर, शारीरिक स्थिति, गृहस्थ की परिस्थिति, बीमारी की हालत आदि इन सब बातों पर निर्भर करता है।
7. भोजन के आधा घण्टे पहले व आधा घण्टे बाद पानी को घूँट—घूँट कर पीना चाहिए। भोजन के प्रारंभ में अगर एक चम्मच पानी मुँह में डाल लें, तो आहार नली में कण्ठ से लेकर आमाशय तक खाने के समय में कोई रुकावट नहीं होगी। यदि गर्मी का मौसम हो और प्यास बहुत लगी हो, तो एक—आधी घूँट पानी पी लेना चाहिए।
8. भोजन से पहले भरपूर सलाद लेना चाहिए। जैसे—खीरा, ककड़ी, टमाटर, बंदगोभी, सलाद का पत्ता, धनिये के पत्ते, पालक के पत्ते, मूली गाजर आदि मौसम के अनुसार लेने से भोजन के बीच तथा भोजन के आधा घण्टे बाद तक पानी पीने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।
9. बहुत ठंडा या बहुत गर्म भोजन या पानी का सेवन न करें।
10. दिन भर में मौसम के अनुकूल पर्याप्त पानी पियें। पानी कम पीने से किडनियाँ खराब हो जाती है।
11. ठोस आहार लेने के बाद छः घण्टे तक तथा पेय पदार्थ लेने के 3 घण्टे बाद तक पानी के अतिरिक्त कुछ न लें।
12. मौसम के फलों का सेवन भोजन के साथ नहीं, अलग से करें।

13. बेमौसमी फलों व सब्जियों का प्रयोग बहुत कम करें, क्योंकि इससे शक्ति कम मिलती है।

14. रस की अपेक्षा फल खाना अधिक उपयोगी है, क्योंकि इसके फोक से पेट भी साफ रहता है।

15. दूध सम्पूर्ण आहार है। अतः उसे भी अलग से लें और घूँट–घूँट कर पियें।

16. आप कितना भोजन खाते हैं यह बात महत्वपूर्ण नहीं है। अधिक मुख्य बात यह है कि आप कितना भोजन पचाते हैं।

17. जो–जो चीजें आपके शरीर को अनुकूल पड़ती हों, उन्हीं को खायें।

18. बन्द डिब्बों में या पैकेट में बने हुए भोजन लाभप्रद सिद्ध नही हुए हैं। डबल रोटी, बिस्कुट, पेस्ट्री इत्यादि सभी ऐसे पदार्थ भोजन में लेना उपयोगी नहीं है।

19. आधुनिक शीतल पेय न लेकर नींबू की सिंकजी का प्रयोग करें।

20. बहुत मसालेदार, तले भुने हुए भोज्य पदार्थ हानिकारक है।

21. हरी सब्जियों को धोकर तथा मंद आँच पर उबाल कर और हल्का सा नमक मिलाकर खाना अधिक उपयोगी है।

22. भोजन के हर पहलू में स्वच्छता का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः साफ बर्तन, साफ पानी, धुले हुए हाथ, स्वच्छ स्थान का भी ध्यान रखें।

23. ईमानदारी एवं मेहनत की कमाई हुई भोजन सामग्री होनी चाहिए। जैसा खायें अन्न, वैसा होय मन वाली कहावत को ध्यान में रखें।

24. भोजन तैयार करते समय तथा परोसते समय पवित्र भावना का होना श्रेष्ठ एवं स्वास्थयवर्धक है।

25. भोजन करने से पूर्व यदि सारी सामग्री को कुछ क्षण मौन होकर भगवान को अर्पित करके ग्रहण करें, तो वह भोजन प्रसाद बन जाता है, जिससे प्रसन्नता ही मिलती है।

26. सायं का भोजन हल्का व सूर्यास्त से एक घण्टे के अन्दर लेने से भोजन पच जाएगा। देर से भोजन करने से फैट बढ़ता है।

27. खाने और सोने में 3 घण्टे का अन्तर होना चाहिए।

28. दिन में भोजन करने के पश्चात कुछ देर विश्राम करना हितकर है। 8 श्वास सीधे, 32 श्वास दायीं करवट तथा 64 श्वास तक बायीं करवट लेटें। इसके अतिरिक्त वज्रासन में भी बैठ सकते हैं।

29. सायं के भोजन के उपरान्त 5 मिनट वज्रासन में बैठें या विश्राम करें व आधा घण्टा टहलें।

30. भोजन के उपरान्त लघुशंका से निवृत्त होना चाहिए, क्योंकि इससे यूरिक एसिड और पथरी नहीं बनती।

31. सीधे बैठकर भोजन करें। आगे झुककर खाना ठीक नहीं। इससे पाचन ठीक रहता है।

32. पानी भी सदैव बैठ कर घूँट–घूँट कर पीना चाहिए।

33. ''थोडा खाना अंग लगना, ज्यादा खाना रोग लगना'' वाली कहावत का ध्यान रखें और बीमार पड़ने से बचें।

34. योग साधना के पश्चात् दूध या फल अथवा दूध के साथ मीठे फल भी लिये जा सकते हैं।

35. भोजन से पहले सलाद, फिर हरी सब्जी या दाल को रोटी या चावल के साथ खायें।

36. घी या मक्खन का प्रयोग आवश्यकतानुसार करें।

37. पूरे दिन में फल एक बार, दूध एक बार तथा ठोस पदार्थ दो बार लें। सब्जी व दालें बदल–बदल कर लें।

38. एक समय में विभिन्न प्रकार के व्यंजन मीठे–नमकीन, खट्टे, दूध, दही से बने आदि लेना ठीक नहीं । इससे पाचन क्रिया बिगड़ती है। कारण, एक समय में एक प्रकार की वस्तु खाने से पैनक्रियाज व लीवर के रस खाना हजम करने के लिये आमाशय से आते हैं। अन्य चीजें खाने से अन्य प्रकार के रस आते हैं। इस प्रक्रिया के कुछ समय चलने से पाचन–तंत्र बिल्कुल बैठ जाता है। अतः एक समय एक प्रकार के व्यंजन लेना अधिक उपयोगी है।

39. कभी भी मन में ऐसा संशय हो कि खाना खाऊँ या नहीं, तो खाना न खाने का निर्णय लेना चाहिए।

40. योग के अनुसार अल्पाहार प्रातः 8:30 से 9:00 बजे तक, भोजन 12:00 से 1:00 बजे तक, अल्पाहार सायं 4:00 बजे व भोजन सायं 7:00 बजे तक तथा उसके बाद 10:00 बजे तक सो जाना चाहिए।

41. मोटापा घटाने के लिए गर्म पानी पियें और मीठा न खायें। भोजन से पहले 20 मिनट तक खूब चबा–चबा कर सलाद खायें। लौकी का जूस पियें। लौकी, तोरी, टिन्डा, पालक, मेथी, चौलाई, बथुआ आदि की सब्जियाँ प्रयोग करें। चावल, आलू, अरबी आदि का प्रयोग कम से कम करें। हरी सब्जियाँ आटे में मिलाकर उसकी रोटियाँ(जिसे राम रोटी कहते हैं) खायें।

42. रात को दही न खायें। भोजन करने के तुरंत बाद परिश्रम न करें।

43. विरोधाभासी व्यंजन

- दूध के साथ खरबूजा, तरबूजा, पपीता व अनार न लें।
- दूध के साथ नमकीन व्यंजन न लें, इससे सफेद दाग होता है।
- रायता व खीर एक साथ न लें।
- खीरा खाने के बाद पानी न पियें।

अंत में मैं यही कहूँगा कि योग जीवन जीने की कला है और युक्ताहार या भोजन उसका एक महत्वपूर्ण अंग है। हम अपनी आदतें ठीक करते हैं, रोग अपने आप ठीक हो जाते हैं।

श्रीराम का हनुमान जी पर विश्वास

—ईश्वरी प्रसाद प्रेम जी

इस प्रकार सुग्रीव की बातें सुन कर भगवान् श्री राम हनुमान जी की ओर देख कर अपना कार्य सिद्ध हुआ ही समझने लगे। उन्होंने मन—ही—मन अत्यन्त प्रसन्न होकर अपने नाम के अक्षरों से युक्त एक अँगूठी हनुमान जी के हाथ में देकर कहा—

अनेन त्वां हरिश्रेष्ठ चिन्हेन जनकात्मजा।
मत्सकाशदनुप्राप्तमनुद्विग्नानुपश्यति।।
व्यवसायश्य ते वीर सत्वयुक्तश्च विक्रमः।
सुग्रीवस्य च संदेशः सिद्धिं कथयतीव मे।।
(किष्किन्धा0 ४४।१३—१४)

कपिश्रेष्ठ! इस चिन्ह के द्वारा जनक नन्दिनी सीता को यह विश्वास हो जायेगा कि तुम मेरे पास से ही गये हो। तब वह निर्भय होकर तुम्हारी ओर देख सकेगी। वीरवर! तुम्हारा उद्योग धैर्य और पराक्रम तथा सुग्रीव का सन्देश मुझे इस बात की सूचना दे रहे हैं कि तुम्हारे द्वारा इस कार्य की सिद्धि अवश्य होगी।

अध्यात्म रामायण में भी प्रायः इसी प्रकार श्रीराम ने हनुमान जी के गुणों की बढ़ाई की है। वहां निशानी के रूप में अपनी मुद्रिका देकर भगवान श्रीराम हनुमान जी से कहते हैं—

अस्मिन् कार्ये प्रमाणं हि त्वमेव कपिसत्तम।
जानामि सत्वं से सर्व गच्छ पन्थाः शुभस्तव।।
४।६।२६

''कपिश्रेष्ठ! इस कार्य में केवल तुम्हीं समर्थ हो। मैं तुम्हारा समस्त पराक्रम भलीभाँति जानता हूँ। अच्छा जाओ, तुम्हारा मार्ग कल्याणकारण हो।''

हनुमान जी को समुद्र लाँघने की प्रेरणा

इसके बाद जब जाम्बवान् और अंगद आदि वानरों के साथ हनुमानजी सीता जी की खोज करते—करते समुद्र के किनारे पहुँचते हैं और श्री सीताजी का अनुसन्धान न मिलने के कारण शोकाकुल होकर सब वहीं अनशन—व्रत लेकर बैठ जाते हैं, तब गृध्रराज सम्पाती से बातचीत होने पर उन्हें यह पता लगता है कि सौ योजन समुद्र के पार लंकापुरी में राक्षस राज रावण रहता है, वहाँ अपनी अशोक वाटिका में उसने सीता जी को छिपा रखा है। तब सब वानर एक जगह बैठकर परस्पर समुद्र लाँघने का विचार करने लगे। अंगद के पूछने पर सभी ने अपनी—अपनी सामर्थ्य का परिचय दिया, परन्तु श्री हनुमान जी चुप साधे बैठे ही रहे। कैसी निरभिमानता है! यह प्रसंग श्री वाल्मीकीय रामायण में बडा ही रोचक और विस्तृत है। यहाँ जाम्बवान् ने श्री हनुमान जी की बुद्धि, बल, तेज, पराक्रम, विद्या और वीरता का बड़ा ही विचित्र चित्रण किया है। वे कहते हैं—

वीर वानरलोकस्य सर्वशास्त्रविदां वर।
तूष्णीमेकान्तमाश्रित्य हनुमन् किं न जल्पसि।।
....
रामलक्ष्मणयोश्वापि तेजसा च बलेन च।।
....
गरुत्मानिव विख्यात उत्तमः सर्व पक्षिणाम्।।

पक्षयोर्यद्बलं तस्य भुजवीर्य बलं तव।
विक्रमश्चापि तेजश्च न ते तेनापहीयते।।
बलं बुद्धिश्य तेजष्य सत्वं च हरिपुंगव।
विशिष्ट सर्वभूतेषु किमात्मानं न बुध्यसे।।
(किष्किन्धा0 ६६–२–७)

''सम्पूर्ण शास्त्रवेत्ताओं में श्रेष्ठ तथा वानर–जगत् के अद्वितीय वीर हनुमान! तुम कैसे एकान्त में आकर चुप साधे बैठे हो? कुछ बोलते क्यों नहीं? तुम तो तेज और बल में श्री राम और लक्ष्मण के समान हो। गमनशक्ति में सम्पूर्ण पक्षियों में सर्वश्रेष्ठ महा–बली गरुड़ के समान विख्यात हो। उनकी पाँखों में जो बल–विक्रम तेज तथा पराक्रम है, वही तुम्हारी इन भुजाओं में भी है। वानरश्रेष्ठ! तुम्हारे अन्दर समस्त प्राणियों से बढ़कर बल, बुद्धि, तेज और धैर्य है, फिर तुम अपना स्वरूप क्यों नहीं पहचानते?''

इसके बाद जाम्बवान् उनके जन्म की कथा सुनाते हैं तथा बाल्यावस्था के पराक्रम और महर्षि अगस्त्य के आश्रम में राष्ट्रोद्धार कार्य के लिये अखण्ड बह्मचर्य व्रत–दीक्षा की स्मृति दिलाते हुए अन्त में कहते हैं–

**उत्तिष्ठ हरिशर्दूल संघयस्व महार्णवम्।
परा हि सर्वभूतानाँ हनूमन् य गति गतिस्तव।। (किष्किन्धा० ६६।३६)**

वानरश्रेष्ठ हनुमान! उठो और इस महासागर को लाँघ जाओ। जो तुम्हारी गति है, वह सभी प्राणियों से बढ़कर है। सभी वानर चिन्ता में पड़े हैं और तुम इनकी उपेक्षा करते हो, यह क्या बात है? तुम्हारा वेग महान् है। इतना सुनते ही श्री हनुमान जी तुरन्त ही समुद्र लांघने के लिये योगबल से प्राणायाम द्वारा अपना शरीर बढ़ाने लगे।

रामचरित मानस में भी इसी आशय का वर्णन है। वहाँ सभी को धैर्य देने के बाद जाम्बवान् हनुमान् जी से कहते हैं–

**कहइ रीछपति सुनु हनुमाना।
का चुप साधि रहेहु बलवान।।
पवन तनय बल पवन समाना।
बुधि विवेक बिंयान निधाना।।
कवन सो काज कठिन जगमाहीं।
जो नहिं होइ तात तुम्ह पाहीं।।**

शरदुत्सव की तिथि घोषित

वैदिक साधक आश्रम तपोवन, देहरादून का शरदुत्सव दिनांक 16 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2019 तक आयोजित किया जायेगा। आप अभी से अपना रिजर्वेशन करवा लें और अपने परिवार के सदस्यों एवं आर्यसमाज के सभी साथियों के साथ 15 अक्टूबर 2019 तक पधारने का कष्ट करें। आश्रम द्वारा पूर्व की भांति आपके भोजन एवं आवास का उचित प्रबन्ध किया जायेगा।

निवेदक :
वैदिक साधन आश्रम तपोवन सोसाइटी के सभी सदस्यगण
सम्पर्क सूत्र : सचिव–9412051586, आश्रम कार्यालय : 7310641586

ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है, सर्व व्यापक चैतन्य स्वरूप शक्ति है

–पं० उम्मेद सिंह विशारद जी

ईश्वर

महाभारत काल के बाद विश्व में एक मात्र महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ही ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने संसार को ईश्वर का सत्य आभास कराया। उन्होने बताया कि ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है अपितु सर्व व्यापक चैतन्य स्वरुप महाशक्ति है। ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड में दृश्य और अदृश्य रूप में दिखाई देता है।

ईश्वर की सिद्धि में अनेक युक्तियां दी जाती है, जैसे सृष्टि में सृजनात्मक चेतन–शक्ति का होना, सृष्टि में क्रम तथा नियमबद्धता का होना, सृष्टि में प्रयोजन अथवा उद्देश्य का होना, सृष्टि की विविधता मे एक सूत्रता का होना, सृष्टि में विशालता का होना, अस्थायित्व में स्थायित्व का होना, ये सब लक्षण जड जगत, वनस्पति जगत तथा प्राणी जगत में सर्वत्र पाये जाते हैं जिनके आधार पर निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि विश्वगत चैतन शक्ति की सत्ता माने बिना यह सब होना सम्भव नहीं है। जिस शक्ति के कारण सृष्टि में ये लक्षण पाये जाते हैं वही शक्ति ईश्वर है।

अदृश्य ही सत्य है

संसार के पदार्थों को दो भागों में बांटा जा सकता है–दृश्य तथा अदृश्य। दृश्य हमें दिखते हैं अदृश्य नहीं दिखते। न दिखने के कई कारण है कि वे इतने सूक्ष्म होते हैं उनको इन्द्रियां देख नहीं सकती। इसका परिणाम यह होता है कि हम दृश्य को ही सत्य समझते हैं। परन्तु वास्तिविक दृष्टि से देखा जाए तो अदृश्य ही सत्य है। अदृश्य न हो तो दृश्य रह ही नहीं सकता। अन्तिम सत्य वृक्ष देखने में तो सत्य है किन्तु नाशवान है और बीज नाशवान नहीं है वही बीज सत्य हैं। ऐसे ही सृष्टि के प्रत्येक पदार्थ विनाश को प्राप्त होते हैं किन्तु उनके अन्दर अदृश्य शक्ति जो सदैव सत्य रहती है कभी भी विनाश को प्राप्त नहीं होती है।

सृष्टि में प्रयोजन या उद्देश्य

सृष्टि में प्रत्येक वस्तु का प्रयोजन है तथा किसी उद्देश्य हेतु उसका निर्माण हुआ है। प्रत्येक पदार्थ के प्रयोजन होने का उद्देश्य सिद्ध करता है कि उसके निर्माण के पीछे कोई चैतन शक्ति है और वही शक्ति वस्तु का निर्माण करती है। सृष्टि में घटना चक्र जो चल रहा है उसके सभी कार्य एक निश्चित प्रयोजन से बंधे हैं। क्या इतनी व्यवस्था बिना संचालक के संभव है। बिना चेतन शक्ति के यह नहीं हो सकता है।

सृष्टि क्रम तथा नियम बद्धता

ईश्वर ने सृष्टि कर्म की रचना अद्भुत की है और सूर्य चन्द्रमा तारे व सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को बिना किसी सहारे के अपनी शक्ति से चला रहा है व स्थिर किये हुए है। एक झलक देखिये–

सूर्य पृथ्वी से नौ करोड़ चालीस मील दूर है। चन्द्रमा पृथ्वी से दो लाख चालीस हजार

मील दूर है। और निरन्तर बिना सहारे के अपनी धुरी पर घूमते रहते हैं आश्चर्य है इनकी दूरी घटती बढ़ती नहीं है चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा 27 दिन 7 घण्टे 56 मिनट और 12 सेकेण्ड में पूरी करता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर 23 घण्टे 56 मिनट 9 सेकेण्ड में घूमती है। और पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करते हुए एक सेकेण्ड मे 18 मील की दूरी तय करती है। संसार का प्रत्येक परमाणु एक निर्धारित नियम से कार्य कर रहा है यदि उनमें जरा भी व्यवधान हो जाए तो विराट ब्रह्मांड का अस्तित्व एक क्षण में समाप्त हो जाये और एक कण के विस्फोट से अनन्त प्रकृति में आग लग सकती है। यह सम्पूर्ण व्यवस्था ईश्वर ने की हुई है उसी के कारण सब क्रियावान है।

सृष्टि में सृजनात्मक चेतन शक्ति

ईश्वर की व्यवस्था से सृष्टि में प्रत्येक पदार्थ का विकास व विनाश निश्चित हो रहा है। जड़ की हर गति कलान्तर में समाप्त हो जाती है। इस गति को देने वाली कोई शक्ति है। इस गति को देने वाली कोई चेतन शक्ति होनी चाहिए वह जड नहीं हो सकती, उस रचना या सृजन करने वाली शक्ति का नाम ही ईश्वर है।

प्राणी जगत में सृजनात्मक चेतन शक्ति

यह चेतन शक्ति ईश्वर द्वारा प्राणी जगत में उद्बुद्ध हो रही है प्राणी में वैयक्तिक चेतना तथा विश्व चेतना दोनो मौजूद हैं। इनमें वैयक्तिक चेतना आत्मा कहलाती है। विश्व चेतना परमात्मा कहलाती है परमात्मा जड़ चेतन सब में मौजूद रहता है। आत्मा वह है जो कर्म कर्ता और फल भोगता है, चेतना वह है जो न कर्म करती है न फल भोगती है क्योंकि विकास बिना चेतन शक्ति के नहीं हो सकता वह चेतन शक्ति ही ईश्वर है।

वनस्पति तथा वृक्ष जगत में क्रम तथा नियम बद्धता

वनस्पतियों तथा वृक्षों की वृद्धि के भी नियम हैं बीज से अंकुर व अंकुर से फूल, फल फिर उसमें बीज उसी चक्कर में चल देता है। ये नियम टूटता नहीं है। इस विकास को चेतन शक्ति चला रही है, इसलिए यह ईश्वर की शक्ति है।

जड़ जगत में सृजनात्मक चेतन शक्ति

अन्तरिक्ष में अनगिनत तारे हैं। जैसे हमारे सौर–मण्ड़ल में गति है, वैसे उनमें भी गति तथा विकास की प्रतिक्रिया चल रही है, ये सब तारे सौरमण्ड़ल में तीव्र गति से दौड रहे हैं एक दूसरे से लाखों मील दूर होते हुए भी करोडो वर्षों से ये गतिशील है कोई एक दूसरे से टकराते नहीं है ये सब अग्नि के पुंज हैं पृथ्वी भी किसी समय इसी प्रकार अग्निमय थी। जड जगत की इतनी गति इतना विकास चेतन शक्ति के बिना नहीं हो सकता। एक छोटा सा तिनका भी चेतन शक्ति के बिना नहीं हिल सकता। जैसे हवा को कौन चला रहा है, अर्थात जड जगत का प्रत्येक पदार्थ चेतन शक्ति से गतिशील है, जो जड़ में गति दे रहा है वही ईश्वर है।

ईश्वर को व्यक्ति समझने की अज्ञानता

अधिकांश मतो व कथित धर्मों में ईश्वर को महामानव ही माना गया है स्वर्ग नरक की कल्पना भी ईश्वर को मनुष्य मानने के कारण है। ईश्वर मनुष्य जैसा होगा तो किसी विशेष स्थान में रहता होना चाहिए और वह स्तुति

करने से खुश और गाली देने से नाराज होता होगा। यदि वह स्थान विशेष में रहेगा तो सर्व व्यापी नहीं होगा। उसकी जन्म और मृत्यु भी होगी, इसलिए ईश्वर व्यक्ति विशेष नहीं, शक्ति विशेष है। ईश्वर अजन्मा सर्वशक्तिमान है।

ईश्वर के कार्य मनुष्य रूपी मान्य भगवान नहीं कर सकता है

संसार की मान्यताओं को देख आश्चर्य होता है कि अधिक पढ़ा लिखा व ऊँचे पदों पर बैठा व्यक्ति भी जड और चैतन्य तथा ईश्वर और मनुष्य में अपने पूर्व दुराग्रहों की मान्यताओं के कारण भेद नहीं कर पा रहा है। देखिये एक सत्य। ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड का रचियेता है और मनुष्य रूपी मान्य भगवान ईश्वर की रचना में रहता है। ईश्वर सारे जीवों को पालन हेतु भोग सामग्री देता है, ओर मनुष्य रूपी भगवान उसके सामर्थ्य में जीवन जीता है। ईश्वर कर्म फल दाता है और मनुष्य रूपी भगवान कर्म करके ईश्वर की कर्मफल व्यवस्था में रहता है। ईश्वर सृष्टि की उत्पति स्थिति और प्रलय करता है और मनुष्य रूपी भगवान ईश्वर की व्यवस्था में रहता है। ईश्वर अजन्मा और अविनाशी है और मनुष्य रूपी भगवान जन्मा व एक देशी नाशवान है। ईश्वर सृष्टि क्रम द्वारा ऋतुऐं व अन्य वनस्पति देता है और मनुष्य रूपी भगवान ईश्वर की व्यवस्था में जीता और मरता है। ईश्वर निराकार व सर्वव्यापक है और मनुष्य रूपी भगवान एक देशीय, अल्पशक्ति वाला व आकार वाला होता है। सोचिये विचारिये।

ईश्वर का अवतार बाद कल्पना पर आधारित

जन साधारण का विचार है ईश्वर स्वयं अवतार धारण करके पृथ्वी पर जन्म लेते हैं। यह मान्यता महा अज्ञान है। क्योंकि ईश्वर अजन्मा, अव्यय, निराकार, सृष्टिकर्ता है वह साकार कैसे हो सकता है। यह अलग बात है कि मोक्ष से लौट कर मुक्त आत्माऐं सृष्टि के मानवों में संतुलन बनाने के लिये अधर्म का नाश करने के लिए जन्म लेती है। संसार में मानवों का जन्म दो प्रकार का होता है, एक कर्म बद्ध जीवन, दूसरा कर्म बन्धन मुक्त जीवन, जैसे श्री कृष्ण कर्मबन्धन मुक्त जीव है और अर्जुन कर्मबद्ध जीव। कर्म मुक्त जीव अधर्म का नाश करने के लिये जन्म लेते है। अन्तर यह है दोनों में कर्म मुक्त जीवन स्वेच्छा से और क्रमबद्ध कर्म फल भोग हेतु जन्मते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कहा था वेदों की ओर लौटो

वेद सृष्टि का संविधान ग्रंथ है, जिस प्रकार ईश्वर ने सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में प्रत्येक पदार्थ प्राणी मात्र के लिये बनाये हैं, उसी प्रकार संसार में आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यवहारिक सन्तुलन सत्यता बनाने हेतु वेदों की शिक्षाऐं भी प्रदान की है। क्योंकि वेद विज्ञान सम्मत है, वेदों में किसी भी प्रकार का धार्मिक व सामाजिक अन्धविश्वास नहीं है। वेद सार्वभौमिक, सर्वकालिक है वेद की शिक्षाओं से मानव समाज में आपसी स्नेह, परस्पर विरोध रहित चाल चलन, एक ईश्वर पूजा, एक धर्म, एक संस्कार, एक सभ्यता, एक संस्कृति बनी रहती है। आर्य समाज पूर्ण रूप से वेदों की शिक्षाओं पर चल रहा है। इसलिए आर्य समाज राष्ट्र को सर्वोपरि मानता है। आर्य समाज मानता है कि ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं है, सर्वव्यापक चेतन शक्ति है।

वैदिक साधन आश्रम तपोवन को दान देने वाले दानदाताओं की सूची दिनांक 15 मई 2019 से 17 मई 2019 तक

क्र.स.	नाम	धनराशि
1.	श्री ओम प्रकाश सोनी, जयपुर	1100
2.	श्रीमती ज्योति कुमार, देहरादून	1000
3.	श्री महेन्द्र आर्य, दिल्ली	1000
4.	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा माताजी, देहरादून	2100
5.	श्री मदनपाल त्यागी, उधम सिंह नगर	1100
6.	श्रीमती मुर्ति देवी, सहारनपुर	1100
7.	श्रीमती सरोज आर्या, हरिद्वार	11000
8.	श्री सुभाष मोर, हरियाणा	1100
9.	मा० सुरेन्द्र सिंह, बिजनौर	2000
11.	श्रीमती सुष्मिता देवी, बिजनौर	1000
12.	श्रीमती सुरेन्द्र अरोड़ा माताजी, देहरादून	3100
13.	श्री ज्ञानेन्द्र पाल, दिल्ली	2100
14.	श्री ठाकुर दास गांधी, जी	2100
15.	श्री ईश्वर कथूरिया, गुडगाँव	2100
16.	श्री डी०डी० अरोड़ा, नई दिल्ली	1100
17.	श्रीमती स्नेहलता बिज, दिल्ली	2100
18.	श्री भूषण हंस, दिल्ली	1100
19.	श्रीमती आशा जैमिनी, मुरादाबाद	2100
20.	माता कैलाश मारवाह, दिल्ली	5100
21.	श्रीमती सतवंती मनचंदा, नई दिल्ली	1100
22.	आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना	1100
23.	श्री महावीर सिंह जी, देहरादून	5100
24.	श्री कुलदीप सिंह जी, देहरादून	1000
25.	श्री हरिनारायण एवं लीला शर्मा जी, हरिद्वार	2100
26.	श्री प्रेम बहल जी, हरिद्वार	1100
27.	श्री रमन कुमार, देहरादून	1100
28.	श्री विनोद एवं शोभारानी छाबड़ा, हरिद्वार	2500
29.	श्री गिरेज भूटानी, नौएडा	2100
30.	आर्य समाज पटियाला	2100
31.	मुंजाल शोवा लि० गुडगाँव हरियाणा	100000
32.	आर्य समाज नगीना	1000
33.	श्री सुरेन्द्र के० एवं विमल बुद्धिराजा, नई दिल्ली	5100
34.	श्री ब्रजेश भूटानी, नौएडा	1100
35.	श्रीमती लक्ष्मी एवं श्री वेद प्रकाश गौतम, हरिद्वार	2100
36.	श्री सुधीर गुलाटी, देहरादून	3100
37.	श्री दिलबाग सिंह पंवार, देहरादून	5100
38.	डा० रेखा आर्य, अलीगढ़	5100
39.	श्री ओंकार सिंह, देहरादून	1100
40.	श्री एस०पी० अरोड़ा	1100
41.	श्री अशोक कुमार तलवार, देहरादून	1000
42.	श्रीमती ममता जी, देहरादून	1100
43.	श्री जयप्रकाश सिंह, देहरादून	2100
44.	श्री राजू जी, दिल्ली	2100
45.	श्री जगदीश जी, गाजियाबाद	1100
46.	श्री विजयपाल सिंह, हरिद्वार	1100
47.	श्रीमती रेणू शाह, देहरादून	1000

वैदिक साधन आश्रम तपोवन देहरादून सभी दानदाताओं का धन्यवाद करता है।

Delite KOM

freedom to work...

DELITE KOM LIMITED

All dimensions are subject to change without any prior notice because of continuous research & development. All designs shown here are proprietary; Any infringement is liable for prosecution.

Delite KOM **DELITE KOM LIMITED**

Kukreja House, IInd Floor, 46, Rani Jhansi Road, New Delhi-110055
Ph. : 011-46287777, 23530288, 23530290, 23611811 **Fax :** 23620502 **Email :** delite@delitekom.com

ISO 9001 DNV CERTIFIED

डाक पंजीयन UA/DO/DDN/75/2018-2020 समाचार पत्र पंजीयन 51900/88

With Best Compliments From

MUNJAL SHOWA

हाई क्वालिटी शॉकर्स

- TPM Certified
- ISO / TS - 16949 - 2002 Certified
- ISO - 14001 Certified
- OHSAS - 18001 Certified

हमारे उत्पाद

- स्ट्रट्स / गैस स्ट्रट्स
- शॉक एब्जॉर्बर्स
- फ्रन्ट फोर्क्स
- गैस स्प्रिंगस / विन्डो बैलेन्सर्स

मुंजाल शोवा लिमिटेड भारत की प्रमुख शॉक एब्जॉर्बस बनाने वाली कंपनी है जिसकी रेंज फ्रन्ट फोर्कस, स्ट्रट्स (गैस चार्जड और कन्वेन्शनल) और गैस स्प्रिंगस की टू व्हीलर / फोर व्हीलर उद्योगों को उपलब्ध कराती है। कंपनी गुणवत्ता और सुरक्षा के उच्चतम मानकों के अनुरूप अपने सभी उत्पादों का निर्माण करती है। कंपनी के उत्पाद आरामदायक और सुरक्षित सवारी देते हैं और ये टिकाऊ और विश्वसनीय भी हैं। मुंजाल शोवा लिमिटेड, QS 9000, TS–16949, ISO 14001, OHSAS 18001 और TPM प्रमाणित कंपनी है। मुंजाल शोवा के तीन मैन्युफैक्चरिंग प्लॉट हैं – गुड़गाँव, मानेसर (हरियाणा) और हरिद्वार (उत्तराखण्ड)। मुंजाल शोवा लिमिटेड का शोवा कार्पोरेशन जापान के साथ तकनीकी और वित्तीय सहयोग करार है।

हमारे ख्यातिप्राप्त ग्राहक

Hero HONDA HONDA MARUTI SUZUKI YAMAHA

मुंजाल शोवा लिमिटेड

प्लॉट नं. 9–11, मारुति इंडस्ट्रियल एरिया
गुड़गाँव–122015, हरियाणा
दूरभाष :
0124–2341001, 4783000, 4783100
ईमेल : msladmin@munjalshowa.net
वेबसाइट : www.munjalshowa.net

MUNJAL SHOWA

वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी के लिए प्रकाशक मुद्रक प्रेम प्रकाश द्वारा सरस्वती प्रेस, 2, ग्रीन पार्क, निरंजनपुर, देहरादून–248001 (उत्तराखण्ड) से मुद्रित एवं वैदिक साधन आश्रम सोसाइटी (रजि.), नालापानी, देहरादून (उत्तराखण्ड) से प्रकाशित।
संपादक– कृष्णकान्त वैदिक शास्त्री

सरस्वती प्रेस, देहरादून, ई-मेल : akhilg333@gmail.com